- साहित्य
- कला
- संस्कृति
- उद्यमिता

निर्दलीय

अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका

प्रधान संपादक- कैलाश आदमी

उप संपादक: सरिता गर्ग 'सरि'
प्रवासी संपादक: डॉ. सुनीता शर्मा

वर्ष: २० | अंक: ०१ | नई दिल्ली, जनवरी २०२५ | मूल्य: १०/- | विशेषांक: ५०/-

विश्व शांति विशेषांक

हृदय-हृदय में व्याप्त हो, राष्ट्र प्रेम अनुराग।
पूर्ण विश्व को शांत करेगा, अंध श्रद्धा त्याग।।

अग्रलेख पृष्ठ- ४ पर

सुरभि सेलिब्रेशन्स अवधपुरी क्षेत्र का पहला सुव्यवस्थित और भोपाल के बेहतरीन बैंक्वेट हॉल में से एक है।

अत्याधुनिक सुविधाएं प्रदान करने के अपने उद्देश्य के साथ, सुरभि लाइफस्पेसेस आपके लिए लेकर आये हैं अपने विशेष पलों का जश्न मनाने और सुखद यादों को संजोने के लिये।

शादी, सगाई, वर्षगांठ, जन्मदिन, सेवानिवृत्ति पार्टियों इत्यादि जैसे आपके यादगार अवसरों को आनंदमयी बनाने के लिये उच्चकोटि प्रयास किया है। चाहे वह पारिवारिक/मांगलिक कार्यक्रम हो जैसे संगीत, हल्दी, मेहंदी आदि या व्यावसायिक कार्यक्रम जैसे कांफ्रेंस और कॉर्पोरेट बैठकें, सेमिनार, उत्पाद लॉन्च हम आपको सर्वश्रेष्ठ सेवा देने के लिए तत्पर हैं।

सुरभि सेलिब्रेशन्स की विशिष्ट विशेषताएं :

- 250-300 व्यक्तियों के लिये पर्याप्त लगभग 6000 वर्ग फीट का बैंक्वेट हॉल जो कि पावर बैकअप के साथ पूरी तरह से वातानुकूलित है।
- शुद्ध एवं शाकाहारी केटरिंग की शानदार सुविधा।
- सर्व गुण संपन्न: भव्य रिसेप्शन हॉल, विशाल कार-पार्किंग, विस्तृत मंच, लॉकर सेफ के साथ ग्रीन-रूम, मेकअप सुविधाओं के साथ एंटी-रूम, एक क्लासिक बार-लाउंज और एक अद्भुत फोटो-सेशन पाइंट; सुरभि सेलिब्रेशन्स सभी सुविधाओं से सम्पन्न है। विशेष मांग पर बार सेटअप भी उपलब्ध है (Subject to State Approval)
- 1000 वर्ग फीट का डांस-फ्लोर, सराउंड-साउंड इफेक्ट तथा स्वचालित लेजर लाइट के साथ जो कि एक शानदार डीजे कार्यक्रम के लिए उपयुक्त है।
- GUEST ROOMS : लगभग 50 व्यक्तियों के ठहरने की उत्तम व्यवस्था। आपके मेहमानों को प्रभावशाली आतिथ्य देने के लिए आरामदायक अतिथि कक्ष।

Follow us on

Visit us on
www.surabhicelebrations.com

fssai
Regn. No. : 21423010000665

सुरभि सेलिब्रेशन्स

A Prestigious Project by

SURABHI
CELEBRATIONS LLP

Location

Surabhi Smart City, 80' Wide DRM / AIIMS Road, Adj. Reliance Trends,
Opp. Reliance Smart Point, Near Awadhpuri, Bhopal

99936 42858
97550 42858

अंतरंग

स्तंभ	शीर्षक	लेखक/ कवि/समीक्षक	पृष्ठ
आमुख	विश्व शांति के लिए	कैलाश आदमी	४-६
आलेख	वैदिक काल से विश्व शांति	सुरेश खांडवेकर	७-८
--''--	युद्ध के साए में	मनोरमा पंत	९-१०
कविता	शांति और युद्ध	राजेंद्र शर्मा 'अक्षर'	१०
आलेख	उभरता हुआ खतरा	सौम्या पांडे	११-१२
--''--	विश्व शांति एक सामूहिक प्रयास	डॉ. सुनीता शर्मा	१३-१४
आलेख/कविता	विश्व शांति	प्रिया भारद्वाज/सरिता गर्ग 'सरि'	१५-१६
आलेख	वैश्विक एकता का सूत्र	ललित शर्मा	१७-१८
कविता	विश्व शांति	भगवानदास शर्मा प्रशांत/कृष्णदेव चतुर्वेदी	१८
आलेख	अंतर्रात्मा को टटोलें	मनोज चतुर्वेदी	१९
--''--	विश्व शांति कब और कैसे?	डॉ. पुष्पा श्रीवास्तव	२०
आलेख/कविता	शिक्षा से विश्व शांति	मधुबाला पांडे/दुलकांति समरसिंघ	२१
--''--	विश्व शांति दूत	चंचलिका शर्मा/प्रतिभा पांडे	२२
आलेख	शांति की अनवरत चाह	डॉ. सीमा अग्रवाल	२३
आलेख	विश्व शांति के लिए शिक्षा	वंदना सहाय	२४-२५
कविता	विश्व शांति	डॉ. नीरजा श्रीवास्तव 'नीरू'	२५
आलेख	मानवता के संरक्षण हेतु विश्व शांति	दीप्ति सक्सेना	२६
--''--	विश्व शांति और हमारा भारत	मनोहर सिंह चौहान 'मधुकर'	२७
--''--	विश्व शांति का सनातन संदेश	डॉ. कुमुद श्रीवास्तव वर्मा 'कुमुदिनी'	२८
कविता	विश्व शांति के लिए मानव	मंजुला श्रीवास्तव	२८
आलेख	विश्व शांति के बैरी युद्ध	सविता व्यास	२९-३०
आलेख	विश्व शांति की परिकल्पना	सरस्वती मल्लिक	३१
कविता	विश्व शांति	शशि प्रभा शाक्य	३१
आलेख	विश्व शांति के चहुमुंखी प्रयास	रति चौबे	३२

मासिक
निर्दलीय

संरक्षक/सलाहकार सुरेन्द्रनाथ दुबे, मेघा पाटकर, डॉ. पवन कुमार जैन, सोहनराज तातेड, सुरेश खांडवेकर, सेठ रामनिवास गुप्ता, कविता मल्होत्रा

कार्यकारी संपादक - प्रिय अभिषेक (प्रिंस अभिशेख अज्ञानी) ९८२६४२२८२० *प्रबंध सम्पादक- अशोक 'निर्मल'

मूल्य 10 रुपये/ विशेषांक 50/- वार्षिक 600/- पंजीकृत डाक 1000/- शुल्क फोन पे/जी पे 9424443401 QR CODE द्वारा या निर्दलीय (nirdaliya) के SBI मुख्य शाखा भोपाल खाता क्रमांक 30030303507 (IFSC code sbin0001308) अथवा निर्दलीय प्रकाशन के यूनियन बैंक (महाराण प्रताप नगर जोन-2 भोपाल) के खाता क्रं. 10121101000060 में जमा कर सकते हैं।

(RNI regn. DELHI/2006/19211) ईमेल nirdaliyadaily@gmail.com ई पेपर nirdaliya.com
भोपाल कार्यालय/संपर्क: निर्दलीय प्रकाशन-एफ११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल ४६२०१६ दूरसंपर्क०७५५ -२७७२४०६
स्वामी, मुद्रक-प्रकाशक-संपादक-कैलाश श्रीवास्तव 'आदमी' (9424443401/8839797448) द्वारा निर्दलीस प्रेस, भोपाल से मुद्रित, राघव भवन सी 6/72 दयालपुर), दिल्ली 110 090 से प्रकाशित।

हृदय-हृदय में व्याप्त हो, राष्ट्र प्रेम अनुराग। पूर्ण विश्व को शांत करेगा, अंध श्रद्धा त्याग।।

कैलाश आदमी

कोई पूछे शांति और सद्‌भाव की दृष्टि से वर्ष २०२४ कैसा रहा तो मेरा जवाब होगा- बीता वर्ष युद्ध, अशांति और अराजकता में बीता। विश्व में जब वर्ष १९१४ में प्रथम विश्व युद्ध शुरू हुआ था तब अधिकांश नागरिकों को कुछ भी समझ में नहीं आया था क्योंकि तब दूरसंचार व परिवहन के साधन विकसित नहीं हुए थे। साथ ही जो नागरिक युद्ध से प्रभावित हुए केवल वही युद्ध की विभीषिका से परिचित हो पाए थे। यह युद्ध पांच वर्ष तक चला किंतु जिन देशों ने प्रथम विश्व युद्ध छेड़ा था उनमें शांति और सद्‌भाव के बीज अंकुरित नहीं हो पाए। परिणाम स्वरूप वर्ष १९३९ में दूसरा विश्व युद्ध छिड़ गया जिसमें अधिकांश देश वही थे जो प्रथम विश्व युद्ध के लिए जिम्मेदार रहे। दूसरा विश्व युद्ध सात साल चला। इस बीच अमेरिका ने जापान के विरूद्ध हाइड्रोजन बम फेंककर उसे पूरी तरह से तबाह करना चाहा था किंतु वह अपने उद्देश्य में पूरी तरह सफल नहीं हुआ। हां, युद्ध के बाद जापान के नागरिकों ने मेहनत करके बम से जीर्णशीर्ण हुए हीरोशिमा और नागासाकी को फिर से खड़ा कर दिया किंतु जापान को अमेरिका ने महाशक्ति बनने से रोका था जिसमें वह सफल रहा।

द्वितीय विश्व युद्ध के उपरांत कई बार ऐसी स्थितियां निर्मित हुईं जब विश्व के नागरिकों को लगा कि तीसरा विश्व युद्ध होकर रहेगा। अमेरिका ने अपनी परमाणु शक्ति विकसित की तो दूसरी ओर सोवियत संघ (वर्तमान रूस) और चीन ने भी महारथ हासिल कर ली। आज अमेरिका, रूस और चीन के अलावा भारत, पाकिस्तान, फ्रांस आदि कई देश परमाणु क्षमता हासिल कर चुके हैं जिससे परमाणु संपन्न देशों में ही यह डर समा गया है कि यदि उन्होंने परमाणु अस्त्रों का उपयोग किया तो अन्य देश भी ऐसा कर सकते हैं जिससे पूरी दुनिया को विध्वंस का सामना करना अपरिहार्य हो जाएगा।

कई देशों ने कई बार अपने दुश्मनों को परमाणु से नष्ट करने की धमकियां दीं जिसमें रूस सम्मिलित है। जब दो वर्ष पूर्व उसने यूक्रेन पर हमला किया और यूक्रेन को अमेरिका एवं यूरोपीयन देशों ने समर्थन दिया तो रूस ने कई बार इस तरह की धमकियां दीं जो इतिहास में दर्ज है। नतीजा यह कि यूक्रेन और रूस की सेनाएं आज भी आमने-सामने खड़ी हैं तथा जब कभी एक-दूसरे पर हमलावर रहती हैं जबकि दोनों देशों के लगभग दस लाख लोग जान गंवा चुके हैं और लाखों लोग पलायन कर गए हैं।

उधर अक्टूबर २०२३ में किए गए हमले के बाद हमास जैसे आतंकी संगठन को तहस-नहस करने पर इजराइल आमादा है। उसने युद्ध के दौरान ४६ हजार फिलिस्तीनियों की हत्या कर दी जिसमें इजराइल १७ हजार फिलिस्तीनियों को हमास का आतंकी बताता है। इजराइल को यदि अमेरिका का समर्थन प्राप्त न होता तो संयुक्त राष्ट्र संघ कभी का उसे आतंकवादी राष्ट्र घोषित कर चुका होता किंतु यूरोपीय संघ के भी इजराइल के समर्थन में होने से संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव अपने हाथ बंधे हुए पाते हैं।

वर्ष २०२४ में दुनिया के कई देशों में उथल-पुथल से गंभीर संकट की स्थितियां निर्मित हुईं जिसमें भारत का पड़ौसी देश बांगलादेश सम्मिलित है। अन्य पड़ौसी देशों में पाकिस्तान में भी वर्ष भर दंगा-फसाद होते रहे तथा तालिबान के आतंकी समूह से जुड़े लोग पाकिस्तान में आज तक दशहत फैला रहे हैं जिसका जवाब पाकिस्तानी सेना भी दे रही है। भारत के अन्य पड़ौसी देशों में श्रीलंका वर्ष भर आर्थिक विपन्नता से जूझता रहा। पूर्व में चीन ने मदद के नाम पर उसे कर्जदार बना दिया और यदि भारत मदद न करता तो श्रीलंका अब तक कभी का दीवालिया घोषित हो चुका होता। अब चीन ने दोबारा मदद के हाथ बढ़ाए हैं।

म्यांमार में चीन पहले ही अपनी कारगुजारियां और कारस्तानी दिखा चुका है। अफगानिस्तान अवश्य ऐसा देश है जहां तालिबानियों का कब्जा है और अमेरिका भी उससे दहशत खाता है। यही वजह है कि अमेरिका को अफगानिस्तान से अपना कब्जा खत्म करना पड़ा था। इसके पूर्व अफगानिस्तान के लड़ाकों ने सोवियत संघ को भी खदेड़ दिया था।

फ्रांस में भी समय-समय पर हिंसा भड़कती रहती है वहां राष्ट्रपति मैक्रो जून २०२४ में संसदीय चुनाव जीत गए लेकिन दक्षिण पंथी नेशनल रैली पार्टी का प्रभुत्व बढ़ता जा रहा है जिससे लगता है कि वे आगामी दो-तीन वर्षों में इस्तीफा देने हेतु बाध्य होंगे।

कनाडा खालिस्तानियों को संरक्षण देता रहता है तथा उसने भारत से संबंध बिगाड़ लिए हैं किंतु अमेरिका का हाथ

उसकी पीठ पर होने से वह बेफिक्र रहा। यह बात अलग है कि २० जनवरी को जब डोनाल्ड ट्रम्प राष्ट्रपति पद पर आसीन हो जाएंगे तब वे कनाडा को अमेरिका का ५१वां राज्य घोषित करने हेतु तिकड़में लगाएंगे जिससे वहां शांति भंग हो सकती है बल्कि गृह युद्ध छिड़ सकता है।

ब्रिटेन में सर कीर स्टारमर की सरकार बन गई है जो बाइडन से अच्छे संबंध बनाए रहे लेकिन ट्रम्प वहां भी दखल दे सकते हैं। ब्रिटेन में वर्ष २०१० से २०२२ तक पांच प्रधानमंत्री रह चुके हैं लेकिन कोई भी प्रधानमंत्री वैश्विक स्तर पर अपनी धाक नहीं जमा पाया बल्कि यूरोपीयन संघ से अलग होने के बाद उसकी स्थिति डांवाडोल रही है।

दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति यूं सुक यूओल के विरूद्ध कई बार नागरिक सड़कों पर उतर आए जिससे भ्रमित होकर उन्होंने मार्शल ला घोषित कर दिया। यूओल की कंजरवेटिव पार्टी अप्रैल-२०२४ में हुए चुनाव में बहुमत खो चुकी है लेकिन वे राष्ट्रपति पद से चिपके हुए हैं। इसके विरूद्ध नेशनल एसेंबली महाअभियोग ला चुकी और अमेरिका का समर्थन पाने के बावजूद यूओल कब कुर्सी गंवा बैठे कुछ कहा नहीं जा सकता।

जापान में नए प्रधानमंत्री शिवोरू इशिबा लिबरल डेकोक्रेटिक पार्टी के हैं किंतु वे विपक्ष से इतने घबराए हुए हैं कि पदस्थापना के २६ दिन बाद चुनाव की घोषणा करना पड़ी किंतु चुनाव में वे अल्प मत में आ गए जिससे इनकी कुर्सी भी खतरे में है।

अरब व खाड़ी देशों में परस्पर तालमेल कम होता जा रहा है। यही कारण है कि जब बांग्लादेश में शेख हसीना को पलायन करना पड़ा तो उन्होंने किसी मुस्लिम देश की शरण लेने की बजाए भारत में शरण ली। अब वहां अल्पसंख्यक हिंदुओं को लगातार प्रताड़ित किया जा रहा है किंतु केंद्र सरकार मूकदर्शक बनी हुई है।

अफ्रीका के ५४ देशों में गरीब निरंतर बढ़ते जा रहे हैं। २०२३ में चीन ने ३९ हजार करोड़ का कर्ज दिया था क्योंकि पश्चिमी देश अपने हाथ पीछे खींच रहे थे। आज स्थिति यह है कि यदि अफ्रीकी देश चीन का कर्ज नहीं चुका पाए तथा गरीबी के जंजाल से नहीं निकल पाए तो अगले ६ वर्षों में दुनिया के ८० प्रतिशत गरीब अफ्रीका में ही दिखाई देंगे। २०३० में इन ५४ देशों की आबादी १.५ अरब हो जाएगी।

यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि आजादी के बाद भारत ने जो लक्ष्य निर्धारित किया वह था विश्व शांति और सद्भाव। इसके लिए जो राह चुनी वह सत्य की है, सच्चाई की है, ईमानदारी की है, भलमनसाहत की है, मेल जोल की है,अहिंसा की है, बराबरी की है, समानता की है और सर्व धर्म समभाव की है। यह रास्ता वही है जो देश को आजादी दिलाने के लिए गांधी जी ने चुना था। इस पर चलने के लिए उन्होंने एक मंत्र भी दिया था जिसे सभी एकादश व्रत के रूप में जानते हैं/अहिंसा, सत्य,अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह, शरीर श्रम,अस्वाद, निर्भयता, सर्वधर्म समभाव,स्वेदशी और अस्पृश्यता/ अर्थात लक्ष्य पूर्ति के लिए हमें सबके साथ एकादश व्रत का पालन करते हुए चलना है।

यद्यपि उक्त रास्ते पर चलकर हमने आजादी प्राप्त कर ली लेकिन आजादी प्राप्त करने के पूर्व अंग्रेजों ने जो बंटवारे की चाल चली उस पर गांधी जी ने कहा कि बटवारा उनकी लाश पर ही हो सकता है। इसके बावजूद कांग्रेस के नेता बंटवारे की जिद कर रहे मोहम्मद अली जिन्ना के आगे झुक गए । नतीजा यह हुआ कि हमें आजादी तो मिल गई लेकिन पाकिस्तान से जो हिंदू भारत आ रहे थे उन्हें मुसलमान बल पूर्वक रोकने लगे तो इधर भारत से पाकिस्तान जा रहे मुसलमानों को हिंदुओं के एक वर्ग ने रोकने की कोशिश की जिससे देश के दोनों ही हिस्सों में रक्तपात हुआ फिर भी उधर जिन्ना ने १४ अगस्त १९४७ को पाकिस्तान के प्रधान पद की शपथ ले ली। इधर जब गांधी जी ने सुना कि बंगाल में ज्यादा मारकाट हो रही है तो वे उसे सत्याग्रह के जरिए रोकने वहां चले गए। इधर अगले दिन पंडित जवाहरलाल नेहरू ने प्रधानमंत्री पद की शपथ ले ली। गांधी जी ने जान हथेली पर रख कर बंगाल में शांति स्थापित करने में सफलता हासिल कर ली और वे दिल्ली लौट आए लेकिन साढ़े पांच माह के भीतर जब वे बिड़ला भवन परिसर में सर्व धर्म प्रार्थना सभा कर रहे थे तब हिन्दू अतिवादी नाथू राम गोडसे नामक युवक ने वहां पहुंच कर गांधी जी के चरणों का स्पर्श किया और फिर उन्हें अपनी पिस्तौल की गोलियों से भून दिया।

खैर, हमारा आजादी की लड़ाई और उससे जुड़ा इतिहास गौरवशाली रहा है जिसे समाज का एक वर्ग आज भी झुठलाने की कोशिश करता है और नाथूराम के दुष्कृत्य को सही करार देते हुए उसके समर्थकों को सत्तारूढ़ दल में शामिल कर उनका महिमा मंडन करता है। जब प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की उनके ही सिख पहरेदारों ने हत्या कर दी तो देश में हिंसा फैल गई। इस अवधि में इंदिरा समर्थकों ने सिखों से बदला लिया तथा इस आड़ में अन्य दहशतगर्दो ने भी मौके का फायदा उठाया और आज ही दहशतगर्द पंजाब को खालिस्तान बनाने पर आमाद हैं। उन्हें कनाडा में आश्रय भी मिल रहा है।

चूंकि मैं और मुझ जैसे करोड़ों लोग किसी राजनीतिक दल में नहीं हैं और न ही किसी राजनीतिक पक्ष के समर्थन में मतदान करने जाते हैं लेकिन देश और दुनिया में शांति रहे इस लक्ष्य को लेकर प्राण पन से लगे रहते हैं और यह कहने से नहीं चूकते कि दुनिया में शांति के लिए अहिंसा और सत्य का

मार्ग ही सर्व श्रेष्ठ है। सत्ता में बैठे लोग सबका साथ और सबका विकास की बात करते हैं उन्हें देश के १४४ करोड़ लोगों में से ४४ करोड़ से भी कम लोग मत देते हैं फिर भी सबसे बड़ा दल या समूह होने के नाते संविधान उन्हें सत्ता में बैठने का अवसर देता है जबकि अन्य दलों के सदस्य एवं निर्दलीय सांसद भी विपक्ष में बैठे रहने के लिए बाध्य होते हैं। चूंकि भारत आबादी के लिहाज से दुनिया का सबसे बड़ा देश है इसलिए जब कोई एक दल अन्य छुटभैया दलों से मिलकर या जोड़तोड़ से सरकार बना लेता है तो वह पूरे देश पर शासन नहीं कर पाता। खासकर पिछले एक दशक में देश के कई हिस्सों में हिंसा व अराजक स्थिति विद्यमान रही किंतु सत्तारूढ़ दल शांति व सद्भाव स्थापित करने में पूरी तरह विफल रहा। मणिपुर ऐसा राज्य है जहां लंबे समय से अशांति व्याप्त है किंतु प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी उसका जिक्र भी नहीं करते। इसी तरह अन्य कई राज्यों में कानून के स्थान पर बुलडोजर राज चलाया जाता है तो सर्वोच्च न्यायालय को दखल देना पड़ता है फिर भी दोहरे इंजिन की सरकार की आड़ में कानून और न्याय की खुलेआम धज्जियां उड़ाई जाती हैं। यह सब इसलिए किया जाता है कि सत्तारूढ़ दल के मतदाताओं को संतुष्ट रखा जा सके। दूसरी ओर अन्य मतदाता भले ही हिंसा की आग में जलते रहें।

अतएव, हम चाहते हैं कि नई संविधान सभा बने जो ऐसा संविधान बनाए जिससे लोक सभा चुनाव जीतने वाले सभी सदस्यों को सत्ता में आने का अवसर और अधिकार मिले। जो लोग लोक सभा चुनाव नहीं जीत पाते अर्थात मतदाता जिन्हें ठुकरा देते हैं वे भी राज्य सभा में पहुंचकर सत्ता में पहुंचने का जुगाड़ कर लेते हैं उस रास्ते को खत्म किया जाए अर्थात केवल एक ही सदन हो लोक सभा का। इसी तरह राज्यों में भी विधान सभा के सिवाय दूसरा सदन न हो। उधर राष्ट्रपति और राज्यपाल जैसे पद न हों क्योंकि इन पदों पर राजनीति में रहे या उससे जुड़े लोग बैठा दिए जाते हैं जो चुने हुए मुख्य मंत्रियों के कामों में रोड़े अटकाकर कानून लागू नहीं होने देते। राष्ट्रपति का काम सर्वोच्च न्यायालय के अतिरित सर्वोच्च न्यायाधीश नियुक्त कर उससे कराया जा सकता है। इसी तरह राज्यों में उच्च न्यायालय में अतिरिक्त उच्च न्यायाधीश नियुक्त कर उनसे राज्यपाल का काम लिए जाने की व्यवस्था की जा सकती है और इस तरह राष्ट्रपति और राज्यपालों पर किए जाने वाले अरबों खरबों रुपए के खर्च से मुक्ति के साथ अड़ंगेबाजी से निजात मिल सकती है। सर्वोच्च न्यायालय में भी न्यायाधीश पदों पर नियुक्ति की प्रक्रिया में राजनीतिक दलों से जुड़े लोग न लिए जाए ऐसा संविधान रचा जा सकता है।

हिंदुओं के एक कट्टरपंथी वर्ग द्वारा तत्कालीन उत्तर प्रदेश सरकार एवं भाजपा शासित अन्य राज्य सरकारों से सांठगांठ कर बाबरी मस्जिद बलपूर्वक ध्वस्त कर राम मंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया गया और केंद्र में आरूढ़ कांग्रेस की नरसिंह राव सरकार ने ढिलाई बरती उसे इतिहास की सबसे लज्जाजनक घटना और त्रासदी कहा जाएगा। इसकी बुनियाद पर आगे जाकर भाजपा जैसी कट्टरपंथी हिंदुत्व की पोषक पार्टी को देश भर में विस्तार का अवसर मिला। चूंकि मामला न्यायालय में गया और सर्वोच्च न्यायालय ने तक बाबरी मस्जिद वाली जमीन का कब्जा राम मंदिर को दिला दिया तथा मुसलमानों से कहा गया कि उन्हें सुदूर आबंटित भूमि पर मस्जिद बनाने की अनुमति दी जाएगी। इस तरह हिंसा के बल पर बाबरी विध्वंस करने वाले लोग बच निकले जिनमें केंद्र में उ प प्रधान मंत्री जैसे उच्च पद पर बैठे नेता भी शामिल थे।

हाल ही सर्वोच्च न्यायालय के सेवानिवृत न्यायमूर्ति आर एफ नरीमन ने कहा कि अयोध्या विवाद से संबंधित शीर्ष अदालत के फैसले धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत के साथ न्याय नहीं करते हैं। उन्होंने मस्जिद और दरगाहों के खिलाफ दायर किए जा रहे विभिन्न मुकदमों के मद्देनजर धार्मिक स्थान अधिनियम १९९१ को लागू करने के महत्व पर भी जोर दिया। मुझे खुशी है कि अभी भी देश में ऐसे न्यायमूर्ति मौजूद हैं जो वर्तमान कट्टरपंथी ताकतों से खौफ खाए बगैर अपनी बात निर्भीकता से पेश करने की सामर्थ्य, जज्बा और हौसला रखते हैं। यदि चुनाव आयोग और मानव अधिकार आयोग को भी सर्वोच्च न्यायालय की तरह स्वतंत्रतापूर्वक काम करने दिया जाए तो देश में चुनाव की निष्पक्षता और मानवीय मूल्यों की स्थापना के साथ हिंसा के स्थान पर अहिंसा की स्थापना संभव है। एक बार फिर मैं हिंसा से अहिंसा की ओर जाने की बात करना चाहता हूं। वह यह है कि अमेरिका ने जापान पर पहला हाइड्रोजन बम फेंक कर उसे तबाह करना चाहा लेकिन जापानी लोग अपनी मेहनत से अपने देश को एक बार फिर अहिंसा और कर्मशीलता के बल पर ऊंचाई पर ले गए। अब तक भारत सहित कई देश परमाणु आयुध संपन्न हो गए हैं ऐसे समय अहिंसा की बात करना बेमानी लग सकती है लेकिन हिंसा का हल केवल अहिंसा ही हो सकता है और अहिंसा के आधार पर ना केवल भारत बल्कि पूरे विश्व में शांति स्थापित की जा सकती है। इस हेतु पूर्व विद्यालय स्तर से महाविद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर पर अहिंसामूलक शिक्षा दी जाना चाहिए।

अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियां-

हृदय-हृदय में व्याप्त हो, राष्ट्र प्रेम अनुराग।
पूर्ण विश्व को शांत करेगा, अंध श्रद्धा त्याग।।

वैदिक काल से विश्व शांति की अवधारणा

सुरेश खांडवेकर

वैदिक काल का साहित्य आज भी प्रासंगिक है। चारों वेदों में शांति, सद्भाव और मित्रता के सैकड़ो मंत्र है। बड़े खेद के साथ कहना पड़ता है कि हम वेद, पुराण और उपनिषदों को भूलते जा रहे हैं । वैदिक काल से विश्व शांति की अवधारणा बहुत विस्तार से दी हुई है किंतु धार्मिक मत-मतांतरों के कारण वैदिक काल के साहित्य को हम लोग भुलाते जा रहे हैं! कुछ नहीं तो केवल वैदिक उपासना की पुस्तक के पन्ने गंभीरता से पलट कर देखेंगे तो उसमें स्वस्ति पाठ के ३१ मंत्र है और शांति पाठ के ३० मंत्र हैं । यह सारे मंत्र समाज में शांति स्थापित करने के लिए है। शांति स्थापित करने का अर्थ है कि न केवल मानव जाति अपितु प्राणी मात्र के लिए हम सोचते हैं ।

हमारा चिंतन समस्त प्राकृतिक जगत के लिए है। प्राकृतिक और सामाजिक तथा प्राणी मात्र की उन्नति के लिए है। इसमें कहां लड़ाई झगड़ा आ गया कहां शत्रुता आ गई? जगत की उन्नति के लिए है जिसमें सबकी सहभागिता हो । सभी को सभी प्रकार से जीने और उन्नति करने के समान अवसर मिल जाएं। जब भी आपके छोटे-मोटे कार्यक्रमों में पूजा पाठ होते हैं तो कार्यक्रम के अंत में यह शांति पाठ होता है। यह केवल औपचारिकता नहीं है। हमारी पूजा पद्धति में जिन जिन मंत्रों उच्चारण किया जाता हैं उसके पीछे केवल औपचारिकता नहीं है। इसके पीछे बहुत बडा संदेश और उद्देश्य है। आजकल इसे बोलना एक औपचारिकता रह गई है। हमने उसे पंडित जी का या ब्राह्मण का एक पूजा पद्धति का अंतिम भाग बना दिया है। शांति पाठ हो गया यानी पूजा समाप्त हो गई बस। अरे शांति पाठ में हम कितने प्रकार की शांति की कामना करते हैं। यह मंत्र केवल वैदिक उपासना के नहीं है। सारे सनातन धर्म में इन मंत्रों को पढ़ा जाता है। इसके अर्थ को जानने का प्रयास करें तो सब समझ में आएगा इसके पीछे कितना गहन उद्देश्य है।

एक मंत्र तो बहुत ही लोकप्रिय है आप सभी लोगों ने उसे सुना होगा। जब भी आप कोई मांगलिक कार्य करते हैं तो मांगलिक कार्य के अंत में शांति पाठ किया जाता है और वह है ओम द्यौ: शांति अंतरिक्ष शांति: पृथ्वी शांति: शांतिराप: शांतिरोषधय: शांति:! वनस्पतिय: शांतिर्विश्वेदेवा: शांतिर्ब्रह्मशांति: सर्वम शांति: शांतिरेव शांति सामा शांतिरेधि।। ओम शांति शांति:

आप सोचते होंगे हम यहां लाखों किलोमीटर दूर बैठे हुए हैं। वहां द्यौ लोक है या कहां सूर्यलोक है और कहां हम? हमारी उपासना कैसे सिद्ध हो सकती है? हम सारे अंतरिक्ष के शांति की, पृथ्वी की शांति की प्रार्थना कर रहे हैं कामना कर रहे हैं। सारे वनौषधि और वनस्पति की कामना करते हैं यह कैसे संभव है ? तो बता दें मानसिक शक्ति बहुत बड़ी शक्ति है, बड़ी सूक्ष्म शक्ति है। मन की शक्ति बड़ी सूक्ष्म शक्ति होती है। यह आत्मा के लक्षणों में है। एक मन और बुद्धि है जो बहुत दूर-दूर तक ही नहीं कई जन्मों तक जाता है। भविष्य के जन्म का प्रारब्ध बनता है! हां तो यह उपासना व्यर्थ नहीं जाती इसकी शक्ति बहुत दूर तक पहुंचती है !

हमारे शास्त्रों के अनुसार हमारे चार लोक होते हैं- एक द्यौ: लोक जिसे आप सूर्य लोक कहते हैं। मरीचि लोक जहां पर सारी चमक दमक होती है! उसके बाद अंतरिक्ष लोक, उसके बाद पृथ्वी लोक जिसे मृत्युलोक कहते हैं और उसके बाद अंतिम है पाताल लोक। यह चराचर जगत में शांति की कामना करने वाला साहित्य क्यों पिछड़ गया ? औषधि पेड़ पौधे जल इन सब के प्रति अच्छी भावना रखने वाला साहित्य क्यों नहीं बन सकता है। यहां भारत मे मुगल काल के बाद , मेकॉले की अंग्रेजी शिक्षा पद्धति ने हमारा वैदिक साहित्य बहुत पीछे धकेल दिया! यही नहीं हमारे वेद तक गायब कर दिए गए।

यजुर्वेद के ६ मंत्र बहुत लोकप्रिय है। कुछ प्रकाशकों ने इन मित्रों को सोने के पहले वाले मंत्र कहा किंतु वास्तव में ये जागने और जगाने वाले मंत्र हैं । प्रत्येक मंत्र के अंत में तन्मै मन: शिव संकल्प मस्तु यह वाक्य आता है। अर्थात हे ईश्वर हमारा मन अच्छे कर्मों में संकल्पित हो! अच्छा काम करें, सामाजिक काम करें, नैतिक काम करें, समाज को जोड़ने का काम करें! समाज को तोड़ने का काम ना करें शिव संकल्प मस्तु ! शिव संकल्प अर्थात अच्छे सकारात्मक एवं रचनात्मक संकल्प करें!

जो कुछ लोग धार्मिक उन्मादों से हमारे बीच मनभेद भी बढ़ा रहे हैं और मतभेद भी बढ़ रहा है। विश्व में चारों ओर सांप्रदायिक कारणों से युद्ध हो रहे हैं। पिछले ४ महीने से बांग्लादेश में हिंदुओं पर जो अत्याचार हो रहा है वह कट्टरपंथियों का कार्य है!

पिछले १० सालों में भारत में हुए धार्मिक दंगों और उनमें मारे गए लोगों की जानकारी उपलब्ध नहीं है, लेकिन, १९६७ से अब तक भारत में करीब ५८ बड़े सांप्रदायिक दंगे हो चुके हैं। किसी धर्म, पंथ या संप्रदाय विशेष के लोगों के बीच होने वाली हिंसा को कहते हैं. इसके तहत, धार्मिक, पंथ या सामाजिक संप्रदाय के बीच होने वाली सभी तरह की हिंसा, झड़प, और दंगे शामिल हैं। भारत में हुए कुछ प्रमुख सांप्रदायिक दंगे-

कलकत्ता दंगा- यह दंगा अगस्त १९४६ में कलकत्ता, बंगाल में हुआ था. धार्मिक भूमि पर बंगाल के विभाजन की वजह से यह दंगा हुआ था. इस दंगे में नरसंहार, मजबूर

रूपांतरण, अपहरण, और बलात्कार जैसी घटनाएं हुई थीं.

अहमदाबाद दंगा- यह दंगा सितंबर में गुजरात के अहमदाबाद और आस-पास के ज़िलों में हुआ था।

दुनिया के कई हिस्सों में सांप्रदायिक दंगे हुए हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख घटनाएं ये रहीं-

भारत: १९४६ से १९४७ के बीच सांप्रदायिक हिंसा की लहरें चलीं। इन दंगों में हिंदू, मुस्लिम, सिख, और जैन धर्मों के लोगों की जान चली गई। इन दंगों में डायरेक्ट एक्शन डे, नोआखली दंगे, और रावलपिंडी में विभाजन के दंगे शामिल है। १९८४ में यानी आज से ४० साल पहले इंदिरा गांधी की हत्या के बाद जो सिखों की हत्याएं हुई उसके पीछे भी सांप्रदायिक विषय ही था। २०२० में भारत में सांप्रदायिक हिंसा की घटनाएं बढ़ीं। सांप्रदायिक हिंसा की कुल ८८७ घटनाएं हुईं, जो २०१९ की तुलना में ९४ प्रतिशत ज़्यादा थी.

अन्य देश: २० वीं सदी में मध्य पूर्व, दक्षिण रूस, पूर्वी यूरोप, मध्य एशिया, दक्षिण एशिया, और दक्षिण पूर्व एशिया में भी सांप्रदायिक हिंसा की घटनाएं हुई।

इतिहास साक्षी है । सांप्रदायिक दंगे, किसी धर्म, पंथ, या संप्रदाय के लोगों के बीच होने वाली हिंसा को कहते हैं. इसमें झड़प और दंगे भी शामिल हैं। भारतीय संदर्भ में, सांप्रदायिक दंगा आम तौर पर हिंदू और मुस्लिम समुदायों के बीच हिंसक व्यवहार को दर्शाता है। कई दशकों से भारत में मंदिर मस्जिद के कारण हिंदू मुसलमान में मतभेद उत्पन्न होते रहे और आपस में कट्टरता उभरने से मारकाट और दंगे आज भी हो रहे हैं।

यदि हम आपसी सद्भाव बढ़ाना चाहते हैं! शांति में जीवन अपना कर सामाजिक राजनीतिक और औद्योगिक उन्नति करना चाहते हैं तो हमें हमारी धार्मिक कट्टर मान्यताओं को त्याग कर सनातनी या वैदिक आध्यात्मिक विचारधारा को अपनाना होगा।

हम इस समय, भौतिक उन्नति के चरम बिंदु पर खड़े हैं। रासायनिक युद्ध सामग्री, मिसाइलें,बम और ड्रोन के बीच में हम हैं! थोड़ा भी संतुलन खो दें तो हम अपने अस्तित्व को खो देंगे । छोटे बड़े सभी लोग चकाचौंध भौतिक उन्नति के पीछे पड़े हुए हैं। भौतिक विलासिता में आकंठ डूबे हुए हैं। लोग अब सब कुछ तत्काल चाहते हैं। कंप्यूटर आ गया, मोबाइल फोन आ गया। टेलीविजन आ गया। ऐसे सामान से घर लबालब हैं। तेज रफ्तार वाली गाड़ियां आ गई। अब तो हर घर में हर चीज दिखाई देती है। फिर भी सब कुछ तत्काल लेना चाहते हैं । तत्काल उन्नति करना चाहते हैं । हर कोई, हर हाल में सारे सुख एक साथ पाना चाहता है। इस चाहत में इतनी होड़ लगी हुई है कि लोग प्रेम, रिश्ते नाते, संवेदना , आपस दारी सब भूलते चले जा रहे हैं । हिंसा, अत्याचार, बलात्कार, चोरी, रिश्वतखोरी, बेईमानी, बंदुकबाजी और तमंचेबाजी बढती जा रही है। मूल कारण क्या है ? मूल कारण है हमारी दूषित शिक्षा प्रणाली । हमारे शिक्षा प्रणाली में दोष है । किसी भी धर्म मे हिंसा, अत्याचार और असत्य को स्थान नही है किंतु मुट्ठी भर लोग सत्ता पाने के लिए लोगों में मतभेद उत्पन्न कर रहे हैं । आपस में भिड़ा रहे हैं, जिससे न केवल छोटे-छोटे गांव में बड़े शहरों में, बल्कि देश की सीमाओं में युद्ध होने लगे हैं। यह सब संसार में चलते रहना है और इसलिए वैदिक विषयों को सभी विद्यार्थियों को पढ़ाया जाए तो बहुत परिवर्तन होगा क्योंकि इसमें किसी प्रकार का स्वार्थ और व्यक्तिगतगत्ता नहीं है। सारा विषय सामूहिक विकास का है।

- नई दिल्ली

युद्ध के साये में विश्व शान्ति

मनोरमा पंत

आज पूरे विश्व में तीसरे विश्वयुद्ध का खतरा मंडरा रहा है । रुस यूक्रेन के युद्ध में रोज लगभग १५०० युवा मर रहे हैं । इस युद्ध में यूक्रेन के ३१ हजार सैनिक मारे जा चुके हैं जब कि रुस में हताहत सैनिकों का आंकडा ५०,००० तक पहुँच गया है, जिनमें १००० सैनिक उत्तर कोरिया के हैं याने उत्तर कोरिया खुलकर रुस के पक्ष में कूद चुका है । २०१४ में प्रारम्भ हुए इस युद्ध में यूक्रेन को १५२ अरब डॉलर का नुकसान हो चुका है ।

शुक्रवार २० दिसम्बर को रुस ने आठ बैलेस्टिक मिसाइलों से यूक्रेन की राजधानी कीव में भारी तबाही मचाई जिसमें ६३० इमारतें, १६ अस्पताल , ३० विद्यालय नष्ट हो गये । युद्ध के नियमों के विरुद्ध नागरिक आवास, अस्पताल, शिक्षा संस्थानों पर मिसाइल छोडी जा रही हैं । इसके जवाब में यूक्रेन ने रूस के कजान शहर पर ड्रोन हमला किया । ड्रोन को ६रिहायशी इमारतों से टकरा दिया ।

जाहिर है कि है कि यह युद्ध विश्व शांति के लिए खतरा बन चुका है ।कीव के नागरिक बंकरों में रहने को बाध्य हैं ,तो शून्य डिग्री तापमान में बिना बिजली के रुस के लोग रहने को बाध्य हैं। रुस में कैदियों को युद्ध में ढकेल दिया गया है । अपर्याप्त कपड़े और भोजन के लड़ाके लड़ रहे हैं।

अब हम बात करते हैं इजराइल हमास युद्ध की जिसे शुरु हुए २४ दिसम्बर २०२४ को पूरा एक वर्ष हो चुका है । इस युद्ध में ४२ हजार फिलिस्तीनी मारे जा चुके हैं जिनमें १६ हजार ७६५ बच्चे थे । ९८ हजार घायल हुए तो १०,००० गायब हैं । इस युद्ध में अब तक १२५ पत्रकार भी मारे जा चुके हैं । आज हालत यह है कि १५ लाख गाजा वासी दर दर की ठोकरें खा रहे हैं। न खाने को भोजन है, न मकान है, न पीने को पानी है, न बिजली है । बच्चे और महिलाएं कूड़े में खाने के पदार्थ ढूँढते नजर आते हैं । राहत साम्रगी उन तक नहीं पहुंच पा रही है क्यों कि बीच में ही लूट ली जाती है । इन अमानवीय दशाओं में लाखों बच्चों बूढ़ों और महिलाओं के मरने का खतरा है ।

इस युद्ध से मिला क्या ? ७० प्रतिशत इमारतें नष्ट हो गई, ६८ प्रतिशत भूमि बंजर हो गई , ८५ प्रतिशत लोग बेरोजगार हो गये। हजारों बच्चे शिक्षा से वंचित हो गये ।

किन्हीं भी दो देशों के बीच युद्धों का पूरे विश्व पर असर पडता है अत: विश्व शान्ति के लिए जरुरी है कि युद्ध विराम के प्रयास लगातार जारी रहे । फिलहाल हमास और इजराइल में भारी विध्वंस के बाद शान्ति है ।

विश्व शान्ति में सबसे बड़ा अवरोध है राष्ट्राध्यक्षों का अहं और अड़ियल रुख । भारी तबाही के बावजूद यूक्रेन रुस पर ड्रोन हमले कर रहा है ,और परमाणु युद्ध की धमकी दे रहा है । युद्ध में उसने रोबोट फोर्स भी उतार दी है तो दूसरी ओर किम जोंग सुसाइड ड्रोन बना रहे हैं रुस के समर्थन में । रुस बैलेस्टिक मिसाइल से यूक्रेन को कंपा रहा है । सोचें हथियार बनाने वाले देश क्यों चाहेंगे कि युद्ध बंद हो ? उनकी अर्थ व्यवस्था तो हथियारों की बिक्री ही है ।

युद्ध के कारण देशों के आयात-निर्यात पर भी प्रभाव पड़ता है । यूरोप के २७ देशों ने अमेरिका से आयात कम कर दिया तो ट्रम्प ने ज्यादा टैरिफ बसूलने की धमकी दी है । इससे अमेरिका और यूरोपीय देशों में टकराव तो बढेगा ही ।

वर्तमान में विश्व शांति को तख्तापलट से भी खतरा पहुँच रहा है । बंग्लादेश में शेख हसीना की सरकार का तख्तापलट के बाद वहाँ बंदूकों का राज हो गया है । हिन्दुओं के मन्दिर तोड़े जा रहे हैं,उन्हें मारा जा रहा है ,घरों से बेदखल किया जा रहा है । अभी तक हिंसा के २२०० मामले सामने आ चुके हैं। इससे भारत और बंग्लादेश के सम्बंध बिगड रहे हैं ।

२०२४ में सीरिया में भी सरकार का तख्तापलट हो गया और वहाँ बंदूकों का राज हो गया है । पता नहीं अब नये सीरिया में कब तक शांति रहेगी । यहाँ के स्थानीय निवासी भय और दहशत की ज़िन्दगी जी रहे हैं । उन्हें नहीं मालूम कि कब उन्हें मार दिया जा सकता है ।

सूडान में लम्बे समय से गृहयुद्ध चल रहा है जिसमें हजारों लोग मारे जा चुके हैं ।

भारत में मणिपुर में मैतई कुकी के बीच की जातीय हिंसा के ६०० दिन बीतने पर अब उग्रवाद में कमी आ रही है । इस हिंसा में दोनों जातियों के अनेक लोग मारे गये । लम्बे समय से स्कूल सरकारी दफ्तर बंद रहे । लोगों के घर जलाये गये ।

आतंकवाद से हमेशा विश्व शान्ति को खतरा रहा है । इसकी आग धार्मिक, साम्प्रदायिक कट्टरता बढाती रहती है । हिजबुल्लाह से सभी परिचित हैं। ईरान जैसे देश में कट्टरपंथियों ने महिलाओं पर अमानवीय प्रतिबंध लगाये हैं जिनका विरोध करने पर उन्हें मार दिया जाता है । लगभग सभी देशों में कट्टरपंथी विश्व में अंशान्ति फैला रहे हैं ।

भारत में भी साम्प्रदायिक कट्टरता बढती जा रही है । धर्म के नाम पर माब लींचिग की घटनायें बढती जा रही हैं ,जो देश में अशान्ति फैला रही हैं । आजादी के इतने वर्षों के बाद भी भारत में नक्सलवाद की जड़ें समाप्त नहीं हुई हैं । आज कल कनाडा और भारत के सम्बन्धों में खटास आ गई है क्यों कि खालिस्तान समर्थक वहां शरण लिए हुए हैं ।

इतनी चर्चा के बाद निष्कर्ष यही निकलता है कि वर्तमान में पूरे विश्व में हाहाकार मचा हुआ है , युद्ध ग्रस्त देशों में लोग भूख प्यास , ठंड और बीमारियों से मर रहे हैं ,हजारों लोग विस्थापित होकर नारकीय जीवन बिता रहे हैं ,एक पूरी पीढ़ी शिक्षा से वंचित हो रही है , आतंकवाद से लोग आंतकित हैं,धार्मिक कट्टरवाद तेजी से पनप रहा है ,वहाँ विश्व शान्ति की बात करना बेनामी है ।

विश्व शांति के प्रयास सभी देशों को निज स्वार्थ तज कर करना होगा ,चाहे वह नदियों को लेकर विवाद हो या सीमा को लेकर । रुस यूक्रेन युद्ध पर विराम लगना चाहिए। यह खुशी की बात है भारत हमेशा विश्व शांति के लिए प्रयासरत रहा है । यह भी प्रशंसनीय बात है कि भारत चीन के बीच सीधी उड़ान बहाल करने,मानसरोवर तीर्थयात्रा पुनः शुरु करने, सीमावर्ती नदियों के जल सम्बन्धी समस्याओं के निदान की सार्थक पहल का श्रीगणेश हो चुका है, जिससे दोनों देशों के बीच सौहार्द निश्चित रूप से बढेगा । याद रखें आज भी पूरा विश्व भारत के प्रति आश्वस्त है कि वह यूक्रेन रुस युद्ध रोकने में मदद करेगा । नेहरु जी शान्तिदूत के नाम से प्रसिद्ध हुए जब उन्होंने शीत युद्ध के दौरान भारत की विदेश नीति को आकार दिया और पंचशील का सिद्धांत विश्व को दिया ।

विश्व शान्ति और सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे संगठनों में भारत की भागीदारी सुनिश्चित की । गांधी जी ने सत्य ,अहिंसा और साजिश न्याय के बल पर विश्व शाँति का रास्ता विश्व को बतलाया । नेल्सन मंडेला ने रंगभेद के खिलाफ लड़ाई लड़कर एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ विश्व शान्ति की स्थापना में सहयोग दिया । सभी देशों को समझना होगा कि युद्ध ,धर्मान्धता ,जातिगत कट्टरता ,आंतकवाद से विश्व शाति भंग होती है । महाभारत का युद्ध हमेशा याद रखे जिसमें विजेता को अपनी संतानों को खोना पडा और रिश्तेदारों की हत्या का भागी बन जीवन पर्यन्त पश्चाताप की अग्नि में जलना पडा। विश्व शान्ति के लिए जरुरी है कि हम पूरे विश्व में शांति की मंगल कामना करें–

सर्वे भवन्तु सुखिन: ,सर्वे भवन्तु निरामया ।

–भोपाल

शांति और युद्ध

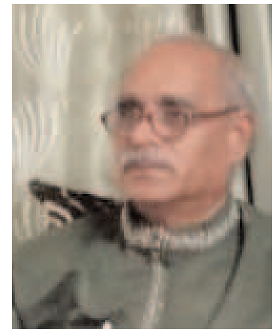

राजेन्द्र शर्मा 'अक्षर '

झूठी सीमाएं सभी
झूठे देश अनेक ।
सबकी धरती एक है
सबका है घर एक ।।

मानवता ही धर्म है
धरती ही है देश ।
भारत की संस्कृति यही
देती है संदेश ।।

धरती एक जहाज पर
पागल कई हजार ।
अपना अपना छेद सब
करने को तैयार ।।

लड़ते-लड़ते हो गए
जिनके बाल सफेद ।
पूछो उनसे युद्ध में
और शांति में भेद ।।

पत्थर से लड़ते कभी
थे इंसान असभ्य ।
एटम बम से लड़ रहे
हैं अब इतने सभ्य ।।

होगा इक दिन युद्ध से
ऐसा पूर्ण विनाश ।
कोई नहीं बच पाएगा
लिखने को इतिहास ।।

बढ़ता जिस विज्ञान से
मानव का व्यक्तित्व ।
मिट न कहीं जाए कभी
उससे ही अस्तित्व ।।

बातचीत से प्रश्न को
हल करते विद्वान ।
मार्ग युद्ध का मूर्ख को
लगता है आसान ।।

कितने दिन का और है
तेरा मेरा साथ ।
एटम बम अब पड़ गया
कुछ मित्रों के हाथ ।।

देख रहे जो युद्ध में
अमन और आनंद ।
उनकी आंखों में हुआ
बड़ा मोतियाबिंद ।।

सिर्फ हराने से नहीं
दुश्मन जाता हार ।
सहमत करना ही उसे
होती जीत अपार ।।

जिस दिन भी हो जाएगा
करुणा का अवसान ।
मानव का मिट जाएगा
उस दिन नाम निशान ।।

नष्ट कीजिए युद्ध के
नाभिकीय हथियार ।
जीने दो सबको यहां
जियो आप भी यार ।।

कर सकता दुनिया फतेह
व्यक्ति शक्ति संपन्न ।
कर सकता पर शक्ति से
प्रेम नहीं उत्पन्न ।।

कहते कहते थक गया
बीत गए दिन रात
समझेगा कब तू भला
मेरे मन की बात ।।

-भोपाल

कुछ गैर प्रजातांत्रिक व विकसित देश विश्व शांति के लिए उभरता हुआ खतरा है

■ सौम्या पाण्डेय 'पूर्ति'

सृष्टि का आरंभ व संचालन सतत विकास की प्रक्रिया है, जिसे आरंभ से ही मनुष्य ने संभाला है। मानव मस्तिष्क जटिल से जटिल समस्याओं का समाधान करते हुए सदियों से ही प्रकृति व जीवों के मध्य संतुलन स्थापित करने में सक्षम रहा है, किंतु जैसा कि सृष्टि का नियम है कि बिना नेतृत्व के समाज व राष्ट्र की कल्पना नहीं की जा सकती है, वहीं यह भी सत्य है कि संचालक का कुशल व नीतिगत होना जहाँ राष्ट्र का निर्माण करता है वहीं हठधर्मिता व तानाशाही देश व समाज को बर्बाद भी कर सकती है।

इसके अनेकों उदाहरण लगभग सभी देशों के पास मिल जाएंगे जिनकी वजह से युद्ध हुए व भारी तबाही हुई जिनसे उबरने में उन राष्ट्रों को सालों साल लग गए, फिर भी अतीत से सबक न लेते हुए वर्तमान में भी इस प्रकार के अनेकों युद्ध चल रहे हैं जो कि नेतृत्व की जिद के कारण न केवल उन देशों की जनता को संकट में डाले हुए हैं बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए खतरा हैं, जिनकी वजह से विश्व शांति का मार्ग अवरुद्ध हो गया है। सर्वप्रथम वर्तमान में चल रहे युद्ध व उन देशों के नेतृत्व पर एक दृष्टि डालते हैं।

इस समय जो देश सबसे लंबे समय से युद्ध में उलझे हुए हैं वो राष्ट्र हैं, रूस व यूक्रेन, यह दोनों देश दो वर्षों से भी अधिक समय से आपसी लड़ाई लड़ रहे हैं, व अगर ये न रुके तो फरवरी में इन्हें युद्ध करते हुए ३ वर्ष पूरे हो जाएंगे इस युद्ध का कारण दोनो ही देशों के नेतृत्व के अहम का टकराव है जिनमें से किसी ने भी आपसी समझदारी का परिचय न देते हुए न केवल युद्ध किया बल्कि लगातार करते ही जा रहे हैं। इस युद्ध ने विश्व के लगभग सभी राष्ट्रों को दो पक्षों में परिवर्तित कर दिया है जिनका प्रत्यक्ष व परोक्ष समर्थन अपने-अपने राजनैतिक कारणों से दोनों ही देशों को प्राप्त है।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि भारत के अतिरिक्त किसी भी अन्य देश ने रूस व यूक्रेन को युद्ध विराम के लिए नहीं प्रेरित किया बल्कि अपनी सैन्य क्षमताओं का प्रयोग उनके युद्ध को बढ़ाने के लिए ही किया है। यहाँ यह भी विचारणीय है कि युद्ध करने वाला एक देश रूस एक प्रकार से गैर प्रजातांत्रिक देश ही है तो वहीं उससे ताकत में कहीं कम देश यूक्रेन विकसित देशों के सहयोग से लगातार युद्ध में अपने देश को तबाह करने के लिये प्रतिबद्ध है।

मीडिया द्वारा जारी आकड़ो के अनुसार अब तक इस युद्ध में दोनों देशों के पाँच लाख से भी ज्यादा सैनिक प्रभावित हुए हैं जिनमें अनुमानतः लगभग दो लाख सैनिकों ने अपने प्राण गंवाए हैं व बाकी हताहत हुए हैं। यदि दोनों देशों के कुल प्रभावित नागरिकों की संख्या देखें तो सैनिकों व आम जनता को मिलाकर करीब १० लाख लोग या तो मारे गए हैं अथवा घायल हुए हैं, जो कि बेहद दुःखद है। यह खुफिया जानकारी द वाल स्ट्रीट जनरल (WSJ) के आधार पर प्राप्त हुई है।

इसके अतिरिक्त इन दोनों ही देशों की संपत्ति, व इंफ्रास्ट्रक्चर का इतना नुकसान हुआ है कि इन्हें पुनः स्थापित होने में वर्षों लग जाएंगे। इसमें यूक्रेन को लगभग १५२ अरब डॉलर यानि कि (१३ लाख करोड़ रुपए) की हानि हुई है। संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट के अनुसार अब उन्हीं संसाधनों के पुनर्निर्माण के लिए यूक्रेन को लगभग ४३४ अरब डॉलर, लगभग (४१ लाख करोड़) रुपए की आवश्यकता होगी। इसके बाद भी जो जनहानि हुई है उसकी तो कोई भरपाई हो ही नहीं सकती न ही वहाँ के नागरिकों के लिए जीवनशैली सामान्य हो सकती है। वहीं रूस की यदि बात करें तो इस महाशक्ति ने भी स्वयं को बर्बाद करने में कोई कसर नहीं छोड़ रखी है। अमेरिकी रक्षा मंत्रालय पेंटागन ने अपनी एक जापानी एजेंसी के सूत्रों से बताया था कि यूक्रेन के साथ युद्ध में रूस को अपनी सेना तैनात करने, हथियारों और रसद आदि पर करीब २११ अरब डॉलर (करीब १८ लाख करोड़ रुपये) का खर्चा करना पड़ा है। इसके अतिरिक्त अमेरिका और जी७ के अन्य सदस्य देशों ने रूस पर प्रतिबंध लगाकर रूसी केंद्रीय बैंक के करीब ३२० अरब डॉलर यानि कि (लगभग २७ लाख करोड़ रुपये) ब्लॉक कर दिए थे, साथ ही तेल की कीमतों में गिरावट से भी रूस को १०० अरब डॉलर (करीब ८.५ लाख करोड़ रुपये) का नुकसान हुआ। इन सभी नुकसान को यदि जोड़ लिया जाए तो कुल १.३ ट्रिलियन डॉलर (करीब १०९ लाख करोड़ रुपये) का नुकसान रूस को होने का अनुमान लगाया जा रहा है, जो कि कई नए छोड़े बड़े राष्ट्रों के निर्माण के लिए उपर्युक्त राशि है। इन सबके अतिरिक्त इन देशों के समर्थन वाले देशों को भी भारी आर्थिक नुकसान हुआ है, जिन्होंने युद्ध को जारी रखने में यूक्रेन को मदद की, जिनमें अमेरिका एवं यूरोपीय देश सम्मिलित हैं।

अब विचारणीय यह है कि अपने नागरिकों के जीवन को संकट में डालकर, पूरा जनजीवन तहस-नहस करके इन देशों को आखिर हाँसिल क्या हुआ? न तो दोनों में से किसी एक राष्ट्र की जीत हुई बल्कि अमेरिका में नए राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने जीतने के बाद युद्ध विराम के प्रयास तेज कर दिए हैं जिन्हें यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की का समर्थन प्राप्त है जो कि उनके हालिया बयानों से जाहिर हो रहा है किंतु इतने नुकसान के बाद युद्धविराम से कोई सफलता अर्जित नहीं हो रही है बल्कि यह अनिर्णीत युद्ध सदियों तक दोनों देशों के नागरिकों के हृदय में टीस बनकर सालता रहेगा, जिसकी जिम्मेदारी सीधे तौर पर दोनों राष्ट्रों के राष्ट्रपति की है जो उनकी विफलता ही है।

अगर सोवियत रूस की बात करें तो वह एक गैर प्रजातांत्रिक देश की तरह ही माना जाता है। जहाँ जनता के मतों के आधार पर ही चुनाव नहीं होते क्योंकि गैर प्रजातांत्रिक का अर्थ ही है कि जिन देशों में लोकमत के द्वारा सत्ता धारियों का चुनाव नहीं होता व एक ही व्यक्ति के हाथ में सत्ता होती है जो अपने सहयोगियों के द्वारा सरकार चलाता है। ऐसे में सत्तारूढ़ दल के निरकुंश होने की संभावना ज्यादा होती है, व कई बार सत्ता के मद में व्यक्तिगत अहंकार अथवा आत्म मुग्धता के कारण सत्तासीन राजा प्रजा के हितों की अनदेखी कर अपने अहम को तुष्ट करने के लिए संकल्परत हो जाता है, जिसका कुछ हद तक उदाहरण रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन हैं। एक लोकतांत्रिक देश होने के बाद भी वहाँ सत्ताधारी दल द्वारा विरोधियों के दमन व राष्ट्रपति के चुनाव की नीतियों में परिवर्तन के कारण ब्लादिमीर पुतिन सन २००० से लगातार (सन २००८ को छोड़कर जब दिमित्री मेदवेदेव राष्ट्रपति बने थे) राष्ट्रपति पद पर बने हुए हैं व अपनी मनमर्जी करने के लिए प्रसिद्ध हैं। इस प्रकार के अन्य उदाहरणों में चीन, ईरान, उत्तर कोरिया, संयुक्त अरब अमीरात, कुवैत, सऊदी अरब, अफगानिस्तान, कतर इत्यादि। इन देशों का दुनिया के प्रति रवैया जग जाहिर है, इनमें से अधिकतर देश युद्ध के लिए सदैव उधृत रहते हैं अथवा आतंकी घटनाओं के लिए जाने जाते हैं। यहाँ सत्ताधारी बहुत ही शक्तिशाली होता है व जनता उसकी हर गतिविधि को स्वीकार करने के लिए बाध्य है।

इसके साथ ही विकसित देशों जैसे अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी एवं अन्य यूरोपीय देश अपने - अपने हितों के अनुसार किसी न किसी देश का युद्ध में साथ देने लगते हैं जिससे धरती युद्ध की विभीषिका झेलने को श्रापित है। होना यह चाहिए कि युद्ध एक अंतिम विकल्प के तौर पर लड़ा जाए लेकिन नाटो सदस्यता वाले देश अमेरिका के साथ मिलकर एक प्रकार से गैंग बनाकर विकासशील देशों को धमकाते हैं व उन्हें युद्ध की आग में झोंकते हैं जैसे कि यूक्रेन के साथ किया । यूक्रेन को सैन्य समर्थन देकर इस युद्ध को तीन साल तक खींच दिया गया जिसकी कोई आवश्यकता नहीं थी बल्कि रूस व यूक्रेन का विवाद कूटनीतिक ढंग से तत्काल रोका जा सकता था।

इसी प्रकार इस्त्राइल व हमास के युद्ध की रणनीति में भी यही कूटनीतिक अभाव देखने को मिल रहा है, यदि इंटेलिजेंस का सही प्रयोग होता तो हमास कभी इस्त्राइल पर हमला ही न कर पाता। इस्त्राइल के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि यह देश चारों ओर से दुश्मन देशों से घिरा होने के बावजूद भी कभी स्वयं आगे बढ़कर युद्ध नहीं करता है, लेकिन यदि उसके देश पर हमला हो तो इस्त्राइल बदला अवश्य लेता है। यदि नाटो चाहे तो अन्य देशों पर ऐसे कड़े नियम लगा सकता है जिससे कि कोई भी देश किसी दूसरे देश पर आसानी से हमला न कर सके, परन्तु ऐसा है नहीं, जिसका खमियाजा युद्ध में आम जनता को भुगतना पड़ता है व इसके दूरगामी परिणामों में अन्य देशों पर भी व्यापक प्रभाव पड़ता है।

इन बड़े युद्धों के अतिरिक्त खाड़ी देशों में अलग युद्ध व आतंकी घटनाओं को अंजाम दिया जाता रहा है। ये देश आपस में व ग्रह युद्ध में भी स्वयं को लिप्त रखते हैं । बांग्लादेश का हालिया तख्ता पलट एक शर्मनाक उदाहरण है तो वहीं पाकिस्तान का अफगानिस्तान से अलग युद्ध चल रहा है। देखा जाए तो पूरे विश्व में अशांति का दौर चल रहा है, जिससे बचने के लिए विकसित देशों के द्वारा कोई ठोस कदम नहीं उठाए जा रहे हैं, यही वह मुख्य कारण है जो विश्व शांति के लिए एक बड़े खतरे के रूप में उभर कर सामने आ चुका है व विश्व को भविष्य में एक बड़े युद्ध की तरफ झौंकने की ओर अग्रसर है जबकि वास्तव में यदि सही दिशा में प्रयास किये जाएं तो वृहद स्तर पर सभी देशों की सम्मिलित भागीदारी से ही शांति व्यवस्था स्थापित की जा सकती है।

कुल मिलाकर निष्कर्ष यही है कि धरती को विकसित देशों की राजनीतिक चालों के कारण व कुछ गैर प्रजातांत्रिक देशों के तानाशाही रवैये के कारण विश्व में शांति की स्थापना नहीं हो पा रही है। ऐसे में भारत जैसे तटस्थ देश ही शांति का बेहतर उदाहरण हैं जहाँ विविधता के बावजूद भी बहुत हद तक शांति व्यवस्था लागू है। भारत आगे बढ़कर विश्व में शांति के प्रयास भी कर रहा है। भविष्य की रणनीति में विश्व शांति के लिए भारत द्वारा किये जा रहे प्रयासों पर अन्य देशों को भी विचार करना चाहिए तभी विश्व में शांति व्यवस्था स्थापित हो सकेगी।

-नोएडा

विश्व शांति- एक सामूहिक प्रयास

डॉ. सुनीता शर्मा

विश्व शांति, मानवता की सबसे महान आकांक्षाओं में से एक है। यह केवल युद्धों की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि एक ऐसा वातावरण है जहां हर व्यक्ति सुरक्षित, स्वतंत्र और गरिमा के साथ जीवन व्यतीत कर सके। यह लक्ष्य जितना महान है, उतना ही इसे प्राप्त करना कठिन भी है।

शांति की आवश्यकता- आज का विश्व विभिन्न चुनौतियों का सामना कर रहा है- आतंकवाद, युद्ध, पर्यावरणीय संकट, आर्थिक असमानता और सांस्कृतिक टकराव। ये सभी शांति के मार्ग में बाधा उत्पन्न करते हैं। शांति केवल राजनीतिक समझौतों से संभव नहीं है; इसके लिए समाज के हर स्तर पर जागरूकता, शिक्षा और सहिष्णुता का प्रसार आवश्यक है।

शांति के लिए आवश्यक तत्व

१. सकारात्मक संवाद- संवाद के माध्यम से गलतफहमियां दूर की जा सकती हैं। विभिन्न समुदायों और राष्ट्रों के बीच बेहतर संवाद शांति स्थापना का मूल आधार है।

२. शिक्षा- शिक्षा लोगों में सहिष्णुता और आपसी समझ विकसित करती है। यह समाज में हिंसा और असमानता को कम करने का माध्यम बन सकती है।

३. आर्थिक समानता- गरीबी और असमानता शांति के सबसे बड़े शत्रु हैं। जब हर व्यक्ति की बुनियादी आवश्यकताएं पूरी होंगी, तभी समाज में स्थिरता आएगी।

४. महिला सशक्तिकरण- महिलाओं को समान अधिकार और अवसर देकर समाज में शांति की दिशा में ठोस कदम बढ़ाया जा सकता है।

भारत ने हमेशा वसुधैव कुटुंबकम् के सिद्धांत का पालन करते हुए विश्व शांति की दिशा में योगदान दिया है। महात्मा गांधी के अहिंसा के सिद्धांत और बौद्ध धर्म के शांति संदेश ने विश्व को प्रेरित किया है। आज भी, भारत वैश्विक मंच पर शांति, सहयोग और सह-अस्तित्व की वकालत करता है।

व्यक्तिगत स्तर पर शांति स्थापना- शांति केवल राष्ट्रों के बीच नहीं, बल्कि व्यक्तियों के भीतर से भी शुरू होती है। जब हर व्यक्ति अपने भीतर शांति स्थापित करेगा, तो यह पूरे समाज और फिर विश्व में फैल सकेगी। ध्यान, योग और आत्मचिंतन के माध्यम से आंतरिक शांति प्राप्त की जा सकती है।

विश्व शांति की स्थापना एक लंबी और निरंतर प्रक्रिया है। यह केवल सरकारों का काम नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। हम सभी को अपने छोटे-छोटे प्रयासों के माध्यम से शांति का संदेश फैलाना होगा। अंततः, जब हम अपने भीतर और अपने आस-पास शांति स्थापित करेंगे, तभी एक शांतिपूर्ण विश्व की परिकल्पना साकार होगी। शांति का मार्ग कठिन हो सकता है, लेकिन यह मानवता की एकमात्र स्थायी दिशा है।

भारत ने विश्व शांति की स्थापना में ऐतिहासिक और समकालीन दोनों स्तरों पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पिछले पाँच वर्षों में, भारत ने विभिन्न माध्यमों से शांति और सहयोग को बढ़ावा दिया-

१. संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन

भारत संयुक्त राष्ट्र शांति मिशनों में सबसे बड़े योगदानकर्ताओं में से एक है। भारतीय सैनिकों ने अफ्रीका, एशिया, और मध्य पूर्व में शांति बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। २०२३ तक, भारत ने ५० से अधिक शांति अभियानों में भाग लिया। भारत ने पहली बार महिला पुलिस इकाइयों को शांति मिशनों में भेजा, जिससे लैंगिक समानता को बढ़ावा मिला।

२. आतंकवाद के खिलाफ सख्त रुख

भारत ने अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर आतंकवाद के खिलाफ सख्त कदम उठाने की वकालत की है।

भारत ने आतंकवाद के वित्त पोषण को रोकने के लिए नो मनी फॉर टेरर कॉन्फ्रेंस (२०२२) के जरिए वैश्विक सहयोग पर बल दिया।

संयुक्त राष्ट्र में पहल- भारत ने आतंकवाद को परिभाषित करने और इसे रोकने के लिए व्यापक कन्वेंशन (सी.सी.आई .टी) को लागू करने पर जोर दिया।

३. क्षेत्रीय शांति और सहयोग

भारत ने अपने पड़ोसी देशों के साथ क्षेत्रीय शांति स्थापित करने के लिए कई प्रयास किए। भारत ने सार्क और बिम्स टेक जैसे मंचों के जरिए आर्थिक सहयोग, आपदा प्रबंधन और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया।

चीन के साथ सीमा विवाद पर बातचीत- भारत ने २०२० के गलवान घाटी विवाद के बाद भी कूटनीतिक तरीकों से शांति बनाए रखने के लिए वार्ता की।

४. पर्यावरणीय शांति और जलवायु परिवर्तन

भारत ने जलवायु परिवर्तन के खिलाफ वैश्विक प्रयासों में सक्रिय भूमिका निभाई। अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA)- भारत ने १२१ देशों को जोड़कर सौर ऊर्जा को बढ़ावा दिया।

नेट-जीरो लक्ष्य (२०७०)- पर्यावरणीय संकट से निपटने और सतत विकास के लिए भारत ने दीर्घकालिक योजनाएं बनाई हैं।

५. वैश्विक मंचों पर शांति की वकालत

भारत ने जी २०, एससीओ और क्वाड जैसे मंचों पर भी शांति और सहयोग को प्राथमिकता दी।

जी २० अध्यक्षता (२०२३)- भारत ने एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य (वसुधैव कुटुंबकम) की अवधारणा को आगे बढ़ाया।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन- भारत ने अपनी स्वतंत्र विदेश नीति के तहत वैश्विक मुद्दों पर तटस्थता और संवाद को बढ़ावा दिया।

६. सांस्कृतिक और धार्मिक संवाद

बौद्ध शांति संदेश- भारत ने बौद्धिक संवाद और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से एशिया और अन्य देशों में शांति को बढ़ावा दिया।

गांधीवादी सिद्धांतों का प्रसार- महात्मा गांधी के अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों को विश्व स्तर पर प्रचारित किया।

न्यूज़ीलैंड ने विश्व शांति और स्थिरता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यह देश अपने शांतिपूर्ण दृष्टिकोण, कूटनीति, और पर्यावरणीय प्रयासों के लिए जाना जाता है। पिछले कुछ वर्षों में, न्यूजीलैंड ने भी निम्नलिखित क्षेत्रों में विश्व शांति के लिए उल्लेखनीय कदम उठाए हैं-

१. परमाणु-मुक्त नीति

न्यूज़ीलैंड ने १९८७ में न्यूज़ीलैंड न्यूक्लियर-फ्री ज़ोन, डिसआर्मामेंट एंड आर्म्स कंट्रोल एक्ट लागू किया, जिससे यह परमाणु-मुक्त क्षेत्र घोषित करने वाला पहला देश बन गया।

संयुक्त राष्ट्र में परमाणु निरस्त्रीकरण का समर्थन- न्यूज़ीलैंड ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर परमाणु हथियारों के खात्मे के लिए पहल की है।

ट्रीटी ऑन द प्रोहीबिशन ऑफ न्यूक्लियर वेपन्स (TPNW)- न्यूजीलैंड इस संधि का प्रबल समर्थक है।

२. शांति अभियानों में भागीदारी

न्यूज़ीलैंड ने संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों में सक्रिय रूप से भाग लिया है। टीमोर लेस्ते और सोलोमन द्वीप- न्यूजीलैंड ने इन क्षेत्रों में शांति स्थापित करने और स्थिरता बनाए रखने के लिए सैनिकों और कूटनीतिक सहयोग दिया।

अफ्रीका और मध्य पूर्व- न्यूजीलैंड के सैनिकों ने संयुक्त राष्ट्र के तहत दक्षिण सूडान और इराक में स्थिरता बनाए रखने में योगदान दिया।

३. पर्यावरणीय शांति और जलवायु नेतृत्व

न्यूज़ीलैंड ने जलवायु परिवर्तन को विश्व शांति के लिए खतरा मानते हुए कई कदम उठाए हैं।

पेरिस समझौते के तहत प्रतिबद्धता- न्यूज़ीलैंड ने ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन कम करने के लिए महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किए हैं।

क्लाइमेट फ़ंड- प्रशांत द्वीप राष्ट्रों को जलवायु संकट से निपटने में सहायता प्रदान की।

नेट-जीरो एमिशन- २०५० तक शून्य कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य।

४. शांतिपूर्ण विदेश नीति

न्यूज़ीलैंड अपनी तटस्थ और शांतिपूर्ण विदेश नीति के लिए प्रसिद्ध है।

संघर्ष समाधान में मध्यस्थता- न्यूजीलैंड ने कई अंतरराष्ट्रीय विवादों में मध्यस्थता का प्रस्ताव दिया, जैसे ईरान परमाणु समझौता।

आसियान और प्रशांत क्षेत्र में सहयोग- न्यूजीलैंड ने क्षेत्रीय शांति को बनाए रखने के लिए आसियान देशों के साथ घनिष्ठ सहयोग किया।

५. सांस्कृतिक और मानवाधिकारों का समर्थन

न्यूज़ीलैंड ने विविधता और मानवाधिकारों के समर्थन में कदम उठाए।

क्राइस्टचर्च आतंकी हमला (२०१९)- इस घटना के बाद, न्यूजीलैंड ने शांतिपूर्ण समाज के लिए अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। प्रधानमंत्री जैसिंडा अर्डर्न ने समावेशिता और सहिष्णुता का मजबूत संदेश दिया।

हेट स्पीच के खिलाफ कानून- न्यूजीलैंड ने नफरत फैलाने वाली गतिविधियों पर नियंत्रण के लिए कठोर कदम उठाए।

६. महिलाओं और अल्पसंख्यकों का सशक्तिकरण

महिला नेतृत्व- न्यूजीलैंड दुनिया के उन कुछ देशों में से है जिसने महिला सशक्तिकरण के जरिए सामाजिक शांति को बढ़ावा दिया।

माओरी समुदाय के अधिकार- माओरी संस्कृति और परंपराओं को संरक्षित करने और उन्हें मुख्यधारा में शामिल करने के लिए कई कार्यक्रम लागू किए।

भारत ने विश्व शांति में अपने योगदान को केवल कूटनीति तक सीमित नहीं रखा, बल्कि सैन्य, पर्यावरण, सांस्कृतिक और सामाजिक स्तरों पर भी सक्रिय प्रयास किए हैं। भारत का वसुधैव कुटुंबकम का दृष्टिकोण एक शांतिपूर्ण और सहयोगात्मक विश्व की परिकल्पना को साकार करने की दिशा में निरंतर प्रेरणा देता है वही

न्यूज़ीलैंड का योगदान भी विश्व शांति में उसके मूल्यों, जैसे अहिंसा, सह-अस्तित्व, और पर्यावरण संरक्षण पर आधारित है। यह देश न केवल संघर्षों से बचने की नीति अपनाता है, बल्कि सक्रिय रूप से शांति और स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए वैश्विक मंचों पर पहल करता है। न्यूजीलैंड का मॉडल दिखाता है कि छोटे देश भी विश्व में अपने कार्यों से बड़े प्रभाव डाल सकते हैं।

निसंदेह यह कहा जा सकता है-

शांति एक यात्रा है, गंतव्य नहीं। यह मानवता के हर कदम में निहित है। विश्व शांति केवल एक आदर्श नहीं, बल्कि एक आवश्यकता है। इसे प्राप्त करने के लिए हर व्यक्ति, समाज, और राष्ट्र को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी।

यह समझना आवश्यक है कि शांति बाहरी परिस्थितियों से अधिक, आंतरिक संतुलन से उत्पन्न होती है।

जब शिक्षा, करुणा, और सहिष्णुता के बीज बोए जाएंगे, तब विश्व शांति का सपना साकार होगा। एक बेहतर, शांतिपूर्ण और समृद्ध दुनिया के लिए हमें वसुधैव कुटुंबकम् की भावना को अपनाना होगा।

जब हम प्रेम और करुणा के मार्ग पर चलेंगे, तो शांति स्वतः हमारे जीवन और विश्व का हिस्सा बन जाएगी।

-न्यूजीलैंड /ऑस्ट्रेलिया

विश्व शांति कैसे संभव है?

प्रिया भारद्वाज

विश्व शांति पृथ्वी पर सभी लोगों और राष्ट्रों के भीतर और उनके बीच शांति की एक आदर्श अवधारणा है । विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों, दर्शन, और संगठनों की अलग अलग अवधारणायें हैं कि ऐसी शांतिपूर्ण स्थिति कब और कैसे आयेगी ।

विश्व शांति सभी देशों और लोगों के बीच और उनके भीतर स्वतंत्रता, शांति और ख़ुशी का एक आदर्श है । विश्व शांति पूरी पृथ्वी में अहिंसा स्थापित करने का एक विचार है जिसके तहत किसी भी देश में या तो स्वेच्छा से या शासन की रीति नीति से शांति लाई जा सकती है।

विश्व शांति के लिए नागरिकों को परस्पर अपने ही समान समझना और अपने ही समान आचरण करना एक ठोस और प्रभाव शाली विचार होगा। अगर इस तरह की सद्भावना और श्रेष्ठ विचार मन में लाए जाएं और क्रियान्वित किए जाएं, तो विश्व समाज में, देश में, सम्पूर्ण संसार में विश्व शांति का आगमन संभव होगा।

हमारे लिए विश्व शांति का मतलब है समता, समानता, बंधुत्व और भाईचारा और सम्मान के साथ जीना और जीने देना। यही बातें विश्व शांति में सहायक हो सकती है । यह सभी बातें हम पर, आप पर, समाज पर, देश दुनिया पर लागू होती है। यही विश्व शांति का मूलमंत्र है ।

यहाँ हम सम्पूर्ण मानव समाज से अपेक्षा करते है , कि दुनियाँ में शान्ति और समझ एवं सद्भाव पैदा करना पूरी मानव जाति का कर्तव्य है । समाज में बड़ी सूझ- बूझ एवं समझ से ही शांति स्थापित की जा सकती है , इसके लिए सामूहिक प्रयास करने की आवश्यकता है ।

इसके विपरीत यदि पूरी दुनिया के लोग एक दूसरे को घृणा और नफ़रत की दृष्टि से देखेंगे तो उसका परिणाम युद्ध और विनाश के रूप में आयेगा ।

विश्व शांति का तात्पर्य है, कि विश्व के सभी देशों के लोगों के एक दूसरे के साथ खुश रहने और सौहार्द पूर्वक रहने की स्थिति। विश्व शांति से एक अंतरराष्ट्रीय समुदाय का निर्माण होता है ।

विश्व शांति से दुनिया के सभी देशों के लोगों की ख़ुशियाँ एक दूसरे के साथ सौहार्द पूर्ण तरीके से रहने की स्थिति के रूप में संदर्भित की जा सकती है। विश्व शान्ति एक अंतर्राष्ट्रीय समुदाय बनाती है, जो जलवायु परिवर्तन जैसे ग्रह को प्रभावित करने वाले बड़े मुद्दों पर भी ध्यान केंद्रित कर सकती है ।

विश्व शांति दुनिया की एक ऐसी परिकल्पना है , जिसमें हिंसा नहीं, जहाँ राष्ट्र एक दूसरे के साथ काम करने का प्रयास करें । विश्व शांति का अर्थ समान मानव अधिकार, अहिंसामूलक तकनीक व प्रौद्योगिकी, सभी के लिए मुफ्त शिक्षा, इंजीनियरिंग, चिकित्सा की उपलब्धता, राजनायिक और सभी प्रकार की लड़ाई का अंत हो सकता है ।

विश्व शांति दिवस २१ सितम्बर को अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस के रूप में मनाया जाता है । संयुक्त राष्ट्र (संघ) महासभा ने इस दिन को सभी देशों और लोगों के बीच शांति के आदर्शों को मजबूत करने के लिए समर्पित घोषित किया है ।

शांति का तात्पर्य सामाजिक मित्रता और सद्भाव से है जहाँ हिंसा, शत्रुता और घृणा जैसी नकारात्मक गतिविधियाँ मौजूद ना हों ।

शांति का महत्व व्यक्तियों से लेकर सामाजिक और अंतर्राष्ट्रीय कई स्तरों तक हो सकता है । शांति एक ऐसी चीज है जो अंत: करण से आती है ।

वैश्विक शांति सूचकांक के अनुसार शीर्ष १० सबसे शांतिपूर्ण देश हैं-आइसलैंड, आयर लैंड, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, सिंगापुर, स्विट्ज़रलैंड, पुर्तगाल, डेनमार्क, स्लोवेनिया और मलेशिया।

१९०१ से अब तक १०० बार नोबेल शांति पुरस्कार दिया जा चुका है, १३१ विजेताओं में- ९० पुरुष, १७ महिलाएं और २४ संगठन सम्मिलित हैं।

विश्व शान्ति में भारत का स्थान- हाल ही में जारी किए गए वैश्विक शांति सूचकांक और ग्लोबल पीस इंडेक्स में भारत १६३ देशों में से १२६ वें स्थान में है जबकि वर्ष २०२२ में १२८ क्रम था।

अब हम विश्व शांति के लाभों से अवगत कराना चाहेंगे-

शांति पूर्ण देश शिक्षा, स्वास्थ्य, संसाधनों में समानता और कुछ हद तक आय वितरण में समानता सुनिश्चित करते हैं, शांति पूर्ण राष्ट्र उपचारित कानून लागू करते हैं जो बुनियादी मानवाधिकारों और स्वतंत्रताओं और नागरिकों के व्यवहार से संबंधित अनौपचारिक, सामाजिक मापदंडों की गारण्टी देते हैं।

विश्व शांति मेरे अनुसार हिंसा रहित दुनिया, जहाँ लोग एक साथ सद्भाव से रहते हैं । यह एक ऐसी दुनिया होगी जहाँ जाति, धर्म या राष्ट्रीयता की परवाह किए बिना सभी को महत्व दिया जाए, और उनके साथ समान व्यवहार किया जाए। यह एक ऐसी दुनिया होगी, जहाँ हम शांतिपूर्वक रहकर आनंदित जीवन व्यतीत कर सकते है । इसके साथ ही साथ जहाँ हम समस्यायों को हल करने और सभी के लिए बेहतर भविष्य बनाने के लिए मिलकर काम कर सकते है ।

संयुक्त राष्ट्र की शांति स्थापना में भारत का बड़ा योगदान रहा है । १९५० के दशक में सयुक्त राष्ट्र संघ के अस्तित्व में आने के समय से ही भारत संयुक्त राष्ट्रीय स्थापना मिशनों मे सबसे अधिक योगदान करने वाला देश रहा है ।

अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस की स्थापना १९८१ में संयुक्त राष्ट्र महा सभा द्वारा की गई थी । उपरोक्त शांति विशेष रूप से युद्ध और हिंसा अनुपस्थिति के लिए समर्पित है, और इसे युद्ध क्षेत्र में अस्थाई युद्ध विराम के द्वारा मनाया जा सकता है ।

विश्व में शांति, बिना प्रेम, और अहिंसा के स्थापित नहीं हो सकती है । शांति के अभाव में मानव जाति का विकास संभव नहीं है । प्रत्येक राष्ट्र का स्वर्णिम युग तभी कहा जा सकता है , जहाँ पूर्ण शांति और आनंद हो । जहाँ उत्तोतम रचनात्मक कार्य किए जाते है ।

वर्तमान युग में हम देखते हैं कि राष्ट्रों के बीच समानता, सहृदयता एवम एक- दूसरे की उन्नति खुशहाली का भाव नहीं है। एक दूसरे के प्रति स्पर्धा की भावना है । एक दूसरे की उन्नति उस राष्ट्र की अच्छाई से सरोकार नहीं है । एक राष्ट्र दूसरे पड़ोसी राष्ट्र की टाँग खिचने में लगा हैं। अपने विज्ञान के संसाधनों का दुरुपयोग कर रहा है। इस प्रकार के क्रियाकलाप से राष्ट्र की उन्नति तो बाधित तो होती ही है, बल्कि उस राष्ट्र की सुख शांति एवं चैन भी छिन जाता है ।

कुछ राष्ट्र हिंसक, अराजक या बुरा व्यवहार दूसरे पड़ोसी देश के साथ करते हैं । इस प्रकार की कार्यवाही से दोनों राष्ट्र अवनति की और जाते हैं । इस प्रकार की स्पर्धा पूरे विश्व में चल रही है जो एक खतरनाक स्थिति की और जाने का मार्ग है । अगर विश्व के अधिकांश राष्ट्रों की यही वीभत्स सोच बनी रही तो एक दिन विश्व एक कुरुक्षेत्र का निर्माण करेगा जिसमें सम्पूर्ण मानव जाति और संसाधनों की हानि होगी। सम्पूर्ण विश्व के राष्ट्रों को द्वापर युग के कुरुक्षेत्र के युद्ध की विभीषिका से सीख लेना चाहिए, उस समय का विज्ञान आज के विज्ञान से बहुत उन्नतशील था ।

यहाँ हम सम्पूर्ण विश्व से आग्रह करते है कि प्रकृति द्वारा जो मानव जाति का आविर्भाव हुआ है । इसे नष्ट करने का अधिकार किसी राष्ट्र को नहीं है ।

अंत में मेरे विचारों के अनुसार एवं मेरी सोच और समझ के अनुसार समस्त विश्व के राष्ट्रों को विश्व शांति बनाये रखने में भरपूर योगदान देना चाहिए । सम्पूर्ण मानव जाति विश्व की अनुपम मनोहर धरोहर इसे बचाए रखना सभी का राष्ट्रीय कर्तव्य और जिम्मेदारी भी है ।

–शार्लोट, नार्थ केरोलाइना, यूएसए

विश्व शांति

सरिता गर्ग 'सरि'

विश्व शांति के हेतु सब, मिलकर करें प्रयास।
सहनशीलता - धैर्य से,जीतें हम विश्वास।।

घृणा, बैर को त्याग कर,रखें शुद्ध आचार।
अपने ही हैं सब यहां,करें प्रेम विस्तार।।

देश विभाजित हैं यहाँ, पर ईश्वर है एक।
जल थल, नभ साझा यहाँ, समझे यह प्रत्येक।

धर्म कोई छोटा नहीं, करो न जाति विचार।
सभी देश संसार के, है अपना परिवार।।

अलग सभ्यता विश्व की, अलग अलग परिवेश।
सम्मानित हैं अब यहां,वंदित सारे देश।।

जगे हृदय सद्भावना,शुभ मंगल हो सोच।
दूरदर्शिता और समझ,वाणी में हो लोच ।।

विश्व शांति के लिए,रहें कपट से दूर।
अरि के प्रायोजन सभी,कर दें चकनाचूर।।

रहे परस्पर प्रेम से, इस धरती के लोग।
वैभव इस संसार का, सभी सकेंगे भोग।।

सुखी रहे संसार सब,नेक रहे व्यवहार।
अमन-चैन हो धरा पर, सपना हो साकार।।

देश परस्पर ना लड़ें,करें नहीं संग्राम।
मानवता जीवित रहे, मचे ना त्राहिमाम।।

विश्व शांति की सोच का, वरण करें प्रण-प्राण।
सत्य अहिंसा प्रेम से, पिघलेगा पाषाण।।

-जयपुर

वैश्विक एकता का सूत्र -विश्व शांति

ललित शर्मा

विश्वभर का लगभग सभी इलाका कमोधिक अशान्ति की समस्या से ग्रस्त है । इसके एक नहीं अनेक कारण हो सकते है , इसमें सबसे पहली जरूरत है कि अशांति से मुक्त परिवेश तैयार करना और इसमें एक होना ज्यादा जरूरी है, अशान्ति से विकसित पटरियों में रोढ़ा अटकता है । हरेक कार्य में बाधक स्थिति बनती है । आपसी सोहार्द भाईचारा की नींव मजबूत करने की शर्त में संकल्प सबसे पहले लिया जाए ।इसके बगैर शांति नही पनपती है । आज पृथ्वी पर सभी देशों की जनता और उन देशों की सरकार अपने नियमों के तहत कार्य करती है । इन्ही से एक-दूसरे में मेलजोल बढ़ाते है । उनकी रहन सहन की पद्धति, खुश रहने कार्यक्रम में भागीदारी निभाते है, इससे सौहार्दपूर्वक सुगन्ध महकती है ।

उदाहरण के तौर पर कोई दूसरे देश के लोग या सरकार उसमें अपने नियम लागू कंरने की कोशिश करता है तो यह नियमों को भंग कर वहां की शांति को भंग करने की विचारधारा दर्शाता है । यही अशान्ति की जड़ हो सकती है । एक देश दूसरे देश से सटे है । वे पड़ोसी देश प्रेम भाईचारे में रहते है तो यह दोनों देशों की तरक्क़ी में लाभप्रद है । उनका आपस मे मनमुटाव होना अशान्ति खडा करता है । दोंनो देशों की सीमाओं से तनावपूर्ण माहौल पैदा हो जाता है । हमें वही तनाव कम करने और रंजिश को मिटाने में एकता की शक्तियों में रहना है ।हमें विश्व शांति का माहौल तैयार करके कुशलता व्यवहारिकता का परिचय में आगे बढ़ना चाहिए ।

कटुता की विचारधारा से हटकर मित्रतापूर्ण की विचारधार में समाहित होना विकास की शक्तियां है। यही वह ताकत है जो कि एक अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को एकजुटता के निर्माण में सहायता करता है । जब भी कोई विकास का विषय एक दूसरे देश का होता है तो उसमें आपसी एकता समन्वय सामन्जसय का निर्माण होना काफी लाभकारी होता है । यह प्रक्रिया केवल विकसित ही नहीं करती बल्कि मिलकर काम करने की अथाह प्रेरणादायक शक्तियों को जन्म देती है किसी भी देश की पहली शर्त होती है-सुरक्षा व शांति । नागरिकों को अशान्ति की जिंदगी से मुक्त करने की एक वृहत्तर शक्ति से नागरिकों को लाभ पहुँचना आवश्यक है । विकास की गतिविधियों में बेहतर सुधार की गुंजाइश होगी तो उस देश की समस्या में निखार स्वत: आएगा । सबसे बड़ी बात बेरोजगार को रोजगार से जोड़ने की वृहद ताकत बढ़ाना सहायक होता है । हमारी शिक्षा का मार्ग किसी भी मायने में कमजोर नहीं होना चाहिए । शिक्षित प्रतिशत से समस्या का समाधान सरलता से निकलता है । विश्व की कला संस्कृति साहित्य या अन्य जानकारी को प्राप्त कर उसकी सामाजिक आर्थिक काया पलटना अत्यधिक सहायक होता है । सबसे बड़ी बात हम देखे तो विकसित देश का पर्यटन उद्योग बहुत ज्यादा लाभकारी होता है । पृथ्वी पर मानव घूम बिना नही रह सकता है । घूमने फिरने की व्यवस्थाओं से मानव जगह जगह पर आगे बढ़कर आंनद लेता है । शांति है या नही मानव पहले इसकी जानकारी लेता है ।बेशक पर्यटकों की बढ़ती संख्या प्रमाणित करती है कि सुरक्षित माहौल है ।वे वहां पर आने जाने में कतराते नही ।

एक देश से दूसरे देश में स्वतंत्र रूप से आना जाना लगा रहता है । हम कभी भी किसी के बहकावे में न आये । कोई भी गलत बयान न दे । किसी भी देश पर झूठे आरोप लगाने से बचे । कभी कभी तीसरी शक्तियों के बीच एकता भंग होने का खतरा बढ़ जाता है ।विश्व शांति का अर्थ समझने से बदलाव आता है । यदि हम देखे तो इसमें सबसे अधिक वैश्विककरण में काफी अधिक बढ़त होती ।

आपस मे एक-दूसरे के साथ स्वतंत्र रूप से खुलकर बोलचाल करने में कुछ नई बातचीत करने में सहायता मिलती है हम सक्षम हो सकते ।आज विश्वभर की आज पर्यटन ने विकास दर में क्रांति ला दी है । प्रतिदिन की शांति में प्रतिदिन पर्यटकों का आगमन प्रस्थान रहने घूमने फिरने तक आर्थिक विकास को नया मोड़ मिलता है । जिस स्थान पर हिंसा लूटपाट अन्य आसामाजिक डर है वहीं का जीवन सुनसान वीरान होता है । हमारी एक बड़ी उपलब्धि और भी है वह है सांस्कृतिक एकता का आपसी आदान-प्रदान करना । इससे हमारे मन के भाव में निखार आता है । हमारी आपसी शक्तिशाली समन्वय की भूमिका का निर्वहन करना ज्यादा लाभदायक होता, जो कि आपसी प्रेम शान्ति में एक वृहत योगदान प्रदान करता है संस्कृति को समझने सांस्कृतिक कार्यक्रम में बढ़चढ़कर भाग लेने का फायदा शांति कायम करता है । अंजान से पहचान बढ़ती है । हम कभी भी बुराई से दूरी रखे, भलाई का भाव बढ़ाये । यह शान्ति व समन्वय कार्य होता है । हमारे समूचे इलाके में सबसे अधिक विकसित होनेवाली व्यवस्था से अर्थव्यवस्थाओं का आंकड़ा उसका स्वरूप निखारे जिसे भविष्य मे विकास में बदलता रूप प्रत्यक्ष होता है । बड़े बड़े उद्योगों को कोई भी उद्योगपति शांति देखकर ही आगे आता है । वह पहले परखने में कमी नहीं रखता ताकि भविष्य में हिंसा का शिकार से आर्थिक निवेश में भारी जोखिम उठाना पड़ जाय । शांति जिस देश की बनी है समूचे कारोबार वह घरेलू हो या विदेशी निवेश बहुत ही सुंदर से करने में सक्षम हैं। हमारी कुछ हरकतें बिल्कुल ही हमारी शान्ति को भंग करने की जटिल बीमारी बन जाती है ।

देश की सारी व्यवस्था में संकटों की कड़ियाँ बंध जाती है । संदेह से शांति भंग में जानमाल की असुरक्षित स्थितिका आये

दिन समाचार सुनना क्या अशान्ति नहीं इसपर कितनी जान चली जाती है । गोलियां बरसाई जाती है । बम के गोले छोड़े जाते है । बमबारी की हालात में समूची कार्यप्रणाली प्रभावित होती है । इसको परस्पर मिलकर समाधान करना एक उपाय है विश्व शांति के माहौल को मजबूत करने पर सभी जन को हिम्मत मिलती है । समस्त मानव जगत को अन्यायपूर्ण बुराइयों से लड़ने की एक शक्ति प्राप्त होती है । यह एकजुट करने में भी सबसे अधिक योगदान देती है। गृह युद्ध को खत्म करने का तरीका है विश्व शांति में योगदान देना ।शान्ति सभा का आयोजन करना ही गृहक्लेश के युद्धों को कम करने में बहुत सहायता करता है ।

आज सबसे दु:खद भरी जिंदगी है अशांति का बीज बोने का षड्यंत्र रचना। समूचे स्थानों में आज युद्ध जैसी पीड़ा सताती है । यह आज के आधुनिकीकरण की दुनिया में मानवीय पीड़ा को कम करने के बजाय बढ़ाने से अशांति का बोलबाला अधिक हम देश दुनिया मे भले ही कही पर रहें हम किसी भी, धर्म, जाति या देश के क्यो न हो हमारी मानसिकता में उच्चतम सोच चिंता जागृत होनी चाहिए । हम अनेकताओं में एकता का पाठ बिना अशान्ति के पढ़ते है तो यह हमारी सबसे बड़ी वैश्विक एकता का सूत्र है । इसे हम अवश्य बढ़ावा दे।

–डिब्रूगढ़ (असम)

विश्व शांति

भगवानदास शर्मा 'प्रशांत'

युद्ध नहीं हल किसी बात का,
नीति न्याय का साथ निभाओ।
स्वार्थ सिद्ध का त्याग करो औ,
जग कल्याणक कदम बढ़ाओ।।

युद्ध आतंक नाश के द्योतक,
मत निर्दोषों का खून बहाओ।
सर्व-धर्म का मूल है मानवता,
मानव होने का भाव जगाओ।।

अब समय नहीं है टकराव का,
शांति सुलह का पथ अपनाओ।
सतत विकास का लक्ष्य सामने,
पर्यावरण, जल-वायु बचाओ।।

ज्ञान विज्ञान का सूत्र सृजन कर,
शिक्षा स्वास्थ्य पे ध्यान बढ़ाओ।
भूख,गरीबी,बीमारी से आहत,
जूझ रहे ऐसे मुल्क बचाओ।।

आज नागासाकी,हिरोशिमा की,
चीख विभीषिका रही बचाओ।
देश,धर्म,जाति,रंगभेद भूलकर,
पहले 'मानव' का धर्म निभाओ।।

जागो विश्व की महाशक्तियों,
कुछ तो ऐसी युक्ति लगाओ।
महाविनाश का साल ये बीता,
अब युद्धआतंक शांत कराओ।।

–इटावा, उत्तर प्रदेश

विश्व शांति

कृष्णदेव चतुर्वेदी

यह कोलाहल युद्ध का
है, शांति का पैगाम लाओ।
गांधी बाबा ने कहा था,आज पथ का सत्य गाओ।।

तुम परस्पर मिल चलों अब, जिंदगी को साधना है।
विश्व शांति की परीक्षा, द्वेष को ही भेदना है।।
बम फटाके बन रहे जो,आज उनमें थाम लाओ।
गांधी बाबा ने कहा था,आज पथ का सत्य गाओं।।

विश्व शांति लक्ष्य रखकर,देश को आगे बढ़ाओ।
जीतने की भूख भागे, अन्न खेतों में उगाओ।।
हो ना दानव इस धरा पर, नेह की गंगा बहाओ।
गांधी बाबा ने कहा था , आज पथ का सत्य गाओ।।

जल रहा यूक्रेन तब से, रूस रूकता है नहीं क्यों।
आज खोए से युवक है, राह दिखती है नहीं क्यों।।
देश बंगला जल रहा है, शांति की आशा जगाओ।
गांधी बाबा ने कहा था, आज पथ का सत्य गाओ।।

मत बनो कमजोर मन से, गीत गीता ने रचा है।
'देव' जैसी भावना यह, सोच में कितना बचा है।।
बस मुनाफा चाहिए अब, हाथ को आगे बढ़ाओ।
गांधी बाबा ने कहा था आज पथ का सत्य गाओ।।

बट गया संसार दल में, भावना निर्बल हुई है।
आदमी के ऑख में ही, आदमी से छल हुई हैं।।
झूठ से तारीफ करके,आज मुझको मत चढ़ाओ।
गांधी बाबा ने कहा था आज पाठ का सत्य गाओ।।

–भोपाल, मध्यप्रदेश

विश्व शांति के लिए अंतरात्मा को टटोलें

■ मनोज चतुर्वेदी

ओम सर्वे भवन्तु सुखिनः। सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु। मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत्॥ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ यह सुक्ति/मंत्र सनातन धर्म में संपूर्ण जगत की शान्ति के लिए हमारे पूर्व ऋषि-मुनियों ने हजारों वर्ष पूर्व सृजित किया था जिसका आशय है- सभी रोगमुक्त रहें, सभी का जीवन मंगलमय बनें और कोई भी दुःख का भागी न बने। हे भगवन हमें ऐसा वरदान दें।

विश्व शांति का संदेश पृथ्वी पर सभी लोगों और राष्ट्रों के भीतर और उनके बीच शान्ति की एक आदर्श स्थिति को निर्मित करना है। विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों, दर्शन और संगठनों के अलग विचारों के होते हुए भी हम भारतवासियों की यह धारणा है कि जब भी हम शांति की कल्पना करते हैं तो कहीं न कहीं हमारे पूर्वजों द्वारा दिया गया उपरोक्त मंत्र का प्रभाव हमारे मानस पटल पर रहता है। सम्पूर्ण विश्व के कल्याण का मंत्र है कि सभी सुखी होवें।

आज के दौर में विश्व शांति एक कल्पना है जिसे जीवन में उतारने के लिए असंभव सा लगता है। विश्व शांति के लिए अलग-अलग देशों में समाजसेवी, दार्शनिक, वैज्ञानिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं चिंतनशील जीव कार्य कर रहे हैं अपने-अपने स्तर पर एक उम्मीद के साथ कि दुनिया में शांति कायम हो। विचार व कार्य पद्धति से कई लोग व्यक्तिगत जीवन में सफल भी हो रहे हैं जिससे मन, कर्म, वचन से किसी को कष्ट नही पहुंचता है वहीं दूसरी तरफ विश्व को अस्थिर करने के लिए भी अनेक संस्थाएं कार्य कर रही है जिसमें आतंकवाद, हथियारों का उत्पादन, जहरीली गैस का उत्पादन, धार्मिक व सामाजिक उन्माद, विकासशील होने की प्रतिस्पर्धा में ऐसी योजनाएं बना दी जाती हैं जिससे शांति दूर-दूर तक नहीं दिखाई देती।

दोहरे मापदण्डों से विश्व शांति स्थापित नहीं होगी। एक तरफ मानव मंगल ग्रह पर जीवन की तलाश कर रहा है वहीं दूसरी तरफ कई देश आपस में लड़ रहे हैं ऐसे में विश्व शांति का प्रयास असफल होता नजर आता है। विकास के नाम पर प्राकृतिक संसाधनों का दोहन तात्कालिक रूप से मानव कल्याण लगता है किंतु स्थायी नहीं। युग, समय, वर्ष कोई भी रहा हो पूर्ण शांति एक कल्पना ही रही। कभी किसी ने सत्ता के लिए युद्ध किया, तो किसी ने बुराई का अंत करने के लिए,तो किसी ने अपनी मन की मर्जी को पूरा करने के लिए।

यदि विश्व में शांति की भावना को प्रबल करना है तो सबसे पहले जीव आत्मा को शांति के मार्ग के लिए प्रेरित करना होगा। यह तभी संभव है जब हम अपने अंदर की जीव आत्मा को सकारात्मक भाव रखने में सफल होंगे। विश्व शांति के लिए सबसे महत्वपूर्ण है राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले शासक और उनके विचारों को समझने वाले समर्थक जिनके अंदर यह भाव हो कि अपने देश के नागरिकों के साथ ही अन्य देशों के नागरिकों को कष्ट न पहुंचे। इसका प्रमाण अपने कर्तव्यों से मिलना चाहिए।

वर्तमान में शब्दों का मायाजाल ऐसा बुना जाता है कि व्यक्ति को लगता है कि यह हमारे जीवन में बड़ा परिवर्तन करेगा। प्रायः यह देखा जा रहा है कि कथनी और करनी में बहुत अंतर आया है। राष्ट्र, समाज, धर्म, विज्ञान की बात करने वाले लोग ही अपने दैनिक जीवन में अपनी कही बातों पर अमल नहीं करते हैं। मार्ग कोई भी हो शांति के लिए। सर्वप्रथम नेतृत्व करने वाले को अपनी कथनी और करनी पर अमल करना होगा। अपने अंदर की जीवआत्मा को पवित्र बनाना होगा तब जाकर कहीं बाहरी दुनिया में शांति स्थापित होगी।

शांति स्थापित करने के लिए हर जीव को यह समझना होगा कि हमारा कर्म कहीं किसी को कष्ट तो नहीं पहुंचा रहा है। जब यह विचार प्रबल होंगे तो धीरे-धीरे मानव में शांति का भाव पैदा होगा जिससे विश्व शांति का मार्ग प्रशस्त होगा।

मानव प्रगतिशील जीव है इसलिए निराशा का भाव को खत्म करने के लिए जो जीव शांति के लिए कार्य कर रहे हैं उन्हे प्रोत्साहन देकर उनके विचारों पर अमल कर आगे बढ़ा जाए। विश्व एक व्यक्ति या एक विचारधारा का नहीं है सभी जगह की जलवायु, भाषा, पर्यावरण, प्राकृतिक संसाधन, शिक्षा, संस्कृति, रहन-सहन, पहनावा, खान-पान में समानता नहीं है । समानता यदि है तो वह है सभी एक जीवआत्मा हैं जिसे शांति के मार्ग पर चलने के लिए प्रयास करना है। शांति के लिए हर जीव के अंदर यह क्रिया हो कि वह जब भी कोई कार्य करे तो उसके मन में यह भाव उत्पन्न हो - सर्वे भवन्तु सुखिनः । सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु। मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत् ॥ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ तब जाकर विश्व शांति की कल्पना को यथार्थ में परिवर्तन किया जा सकता है। -भोपाल

विश्व शांति कब और कैसे?

डॉ. पुष्पा श्रीवास्तव

सुबह का समाचार पत्र हो, या सायं काल का। दूरदर्शन समाचार, हमारा सामना दुखद समाचारों से अवश्य होता है। छिनैती, लूट, चोरी, अपहरण, बलात्कार की वारदातें प्रत्येक समाचार में पढ़ने अथवा सुनने को मिलती है। मुझे याद नहीं, कि कोई भी ऐसा दिन हो, जिस दिन यह सारी वारदातें सुनने, अथवा को पढ़ने को ना मिलती हों। पढ़कर मन बहुत व्यथित होता है। ऐसा लगता है, कि संसार में कहीं भी शांति नहीं है , हर जगह अशांति फैली हुई है।

यहां पर एक बात मन में आ सकती है कि चार लोगों के सीमित परिवार में ही जब शांति नहीं देखने को मिलती है ,तो इतने बड़े विश्व में जहां पर असंख्य लोग,जो भिन्न भिन्न मानसिकता के हैं, वहां पर शांति की कल्पना कैसे की जा सकती है। यद्यपि ऐसा सोचना लाजमी तो है किंतु यह भी संभव है कि पूरे विश्व में शांति का वातावरण कायम किया जा सके । ऐसा होना कोई असंभव सी बात नहीं है।

इस बात पर यदि हम गहराई से विचार करें तो यह निष्कर्ष निकल करके आता है, कि परिवार अथवा व्यक्ति ही वह इकाई है, जो विश्व शांति की धुरी है। व्यक्ति अथवा परिवार में शांति तभी हो सकती है जब मानव अपने समवाय धर्म मानवता से विचलित ना हो।

समवाय धर्म से तात्पर्य है-- मानव से अलग नहीं होने वाला, धर्म - मानवता। यद्यपि मानवता मानव का जन्म -सिद्ध अधिकार है तथापि आज के इस वैज्ञानिक और तकनीकी युग में मानव अपने इस धर्म के प्रति उदासीन देखा जा रहा है।

विश्व में शांति हो इसके लिए यह आवश्यक है, कि मनुष्य के अंदर मानवता सौहार्दता, मैत्री , प्रेम ,आदि भावनाएं हों। जहां मानवता नहीं होगी वहां के लोगों की प्रवृत्तियों में राक्षसी प्रवृत्ति देखी जाएगी और जहां पर लोगों में राक्षसी प्रवृत्ति होगी, वहां के लोगों में शांति नहीं हो सकती है। वहां अशांति ही सब ओर देखने को मिलेगी।

रामायण काल में पूरे विश्व में शांति का वर्णन करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस के बालकांड में लिखा है ,कि राम राज्य में कोई दुखी नहीं था, कोई दरिद्र नहीं था , वहां सब भी लोग सभी प्रकार से संपन्न थे। मैत्री तो इतनी थी, कि उस काल में शेर और बकरी एक घाट पर पानी पीते थे। सभी लोग सबके लिए हितकारी थे । सुख से अपना जीवन यापन करते थे।

रामायण काल विज्ञान और तकनीक की दृष्टिकोण से भी बहुत उन्नत युग था। वाल्मीकि जी की रामायण एवं गोस्वामी तुलसीदास जी की रामचरितमानस का अध्ययन करने से पता चलता है कि लक्ष्मण -रेखा में कौन सी तकनीक थी जो माता सीता जी की रक्षा करने में सक्षम थी ।

इसके अतिरिक्त हनुमान जी का वायु मार्ग से जाना और पर्वत उखाड़ करके ले आना, फिर लक्ष्मण जी को संजीवनी बूटी से जीवित कर देना -क्या यह सब उन्नत तकनीक और विज्ञान को प्रदर्शित नहीं करते? पुष्पक विमान का वर्णन रामायण में मिलता है। गोस्वामी जी ने लिखा है कि जब पुष्पक विमान आकाश में उड़ता था ,तो भारी कोलाहल होता था, यह सब कुछ रामायण -काल के वैज्ञानिक उत्कर्ष को दर्शाता है।

यहां पर ध्यान देने योग्य बात यह है कि इतने विकसित काल में भी, पूरे विश्व में शांति थी। अशांति नहीं थी क्योंकि विकास का रुख मानवतावादी था, सौहार्द -पूर्ण वातावरण था, और अहिंसा थी। उस समय शीर्ष विद्वानों का ध्यान परमाणु बनाने की ओर नहीं था। उस काल में विकास विध्वंसक नहीं था, इसीलिए विश्व शांति थी।

आज विश्व में वैज्ञानिक प्रगति की दिशा बदली है। परमाणु आदि अनेकों विध्वंसक पदार्थों को बनाकर के अपनी कुशलता को प्रदर्शित करने की, जैसे एक बाढ़ सी आ गई है जो कि पूरे विश्व में देखी जा सकती है । आज हर देश अपनी सुरक्षा के लिए चिंतित है, और ऐसे -ऐसे विध्वंसक आयुधों का निर्माण करने में जुटा है जिससे पूरी दुनिया ही नष्ट हो सकती है। मेरे विचार से सामने वाले का निर्माण विनाश से अपनी सुरक्षा यह सोच ही गलत है विनाश बुराई की होनी चाहिए । जहां विध्वंसक की होड़ नहीं होगी, वहां सब लोग स्वयं सुरक्षित होंगे। और जो धन, परिश्रम अथवा तकनीक का प्रयोग विनाशकारी चीजों को बनाने के लिए हो रहा है, उसका उपयोग सही दिशा में होने लगेगा, और विश्व में सर्वत्र शांति होगी। यही विश्व शांति का मूल मंत्र है।

-प्रयागराज

शिक्षा से विश्व शांति

मधुकबाला पांडे

ईश्वर ने प्रकृति के द्वारा धरती के सभी मानवों तथा प्राणियों को ढेरों उपहार दिये हैं यथा विस्तृत नीला आकाश, कल- कल की मधुर ध्वनि गुंजायमान करता नदियों का जल, पहाड़, झरने, पेड़ पौधे, वन संपदा , इन सबके साथ साथ सूर्यदेव का तेजोमय प्रकाश तथा चंद्र देव की शीतल स्वच्छ किरणें।

ये सब ईश्वर प्रदत्त उपहार हैं किन्तु आज , यानि वर्तमान युग में मनुष्य इन सबका आनंद ना उठाते हुये , व्यर्थ ही अर्थ के पीछे भागा चला जा रहा है। लोभ लालच और मोह में जकड़ा हुआ आज का इंसान, भागमभाग और कोलाहल के इस दौर में शांति का आनंद लेना भूलता जा रहा है , एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ पता नहीं कहां ले जायेगी , मूल रूप में पैसा ही सब कुछ बनता जा रहा है।

जहां एक ओर विश्व की जनसंख्या में बहुत वृद्धि हुयी है वहीं लोगों के रहने के लिये घर मकान तथा भवन, व्यवसायिक भवन इत्यादि भी निर्मित हो रहे हैं ।जीवन में सुविधाओं की चाह में आवागमन के साधनों का भी अंधाधुंध निर्माण तथा उपयोग ही रहा है , इन सबसे अत्याधिक शोर फैला हुआ है शहरों में जो गांवों को भी प्रदूषित और प्रभावित कर रहा है।

शांति की खोज में आज मानव भटकता भी दिखाई देता है। अब तो गांवों में भी शांति अथवा सुकून उपलब्ध नहीं होता । एक दूसरे पर कब्जा जमाने की चाह में कहीं कहीं दो देशों के बीच युद्ध भी हो जाते हैं ।जाति धर्म तथा संप्रदाय को लेकर कभी हमारे देश कभी दूसरे देशों में झगड़े भी होते रहते हैं।

यद्यपि हमारे देश की सरकारें सदा से ही शांति तथा अमनप्रिय रही हैं और इस दिशा में प्रयास भी निरंतर होते रहे हैं किंतु कई बार ऐसा लगता है कि हमारा किसी न किसी पड़ौसी देश से कभी भी युद्ध छिड़ सकता है। हाल ही बांग्लादेश में ऐसी स्थिति निर्मित हुई। गनीमत है कि भारत सरकार ने कोई ऐसा कदम नहीं उठाया जिससे युद्ध की स्थिति निर्मित होती।

सरकारों की ओर से , दो देशों के बीच युद्ध रोकने तथा आतंकवादी गतिविधियों को रोकने के लिये हमारे देश की वर्तमान सरकार भी विश्व-स्तर पर प्रयास कर रही है। हमारी शांतिप्रियता को कमजोरी समझकर जब भी किसी देश ने हमला किया है तो हमारी बहादुर सेना ने उसे मुंहतोड़ जवाब दिया है क्योंकि शांतिप्रियता और कायरता में बहुत फर्क है ।

अब आईये मूल बात पर लौटते हैं कि सरकारें तो अपने स्तर से प्रयास करती ही हैं, लेकिन नागरिकों को भी अपने कर्तव्य का पालन करते हुये ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए कि देश की शांति अथवा अमन में फर्क पड़े। इसके लिये घर में अभिभावकों, तथा स्कूल अथवा कालेज में शिक्षकों को अपनी भूमिका जिम्मेदारी से निभानी पड़ेगी कि बच्चे सत्कार्यों की ओर अग्रसर हों बचपन से ही, उनमें हिंसा अथवा अपराध के भाव पनपने ही न पायें , ऐसे प्रयास करने होंगे , क्योंकि जिस देश के बच्चों के मन में यदि हिंसा और नफ़रत की भावना पनपेगी तो युवा होकर वे आतंक और हिंसा की गिरफ्त में आयेंगे ही ।

दया, करूणा, अहिंसा तथा प्रकृति से लगाव, यह सब बचपन से ही सिखाया जाना चाहिए तथा उन्हें प्रयोगात्मक ढंग से बताया जाय कि यदि एक तरफ लड़ाई झगड़े, मार पीट, डी जे तथा वाहनों का शोर ना हो। दूसरी तरफ प्रकृति का सुन्दर दृश्य, मुस्कान बिखेरते लता-पुष्प, लहलहाते खेत , सूर्यदेव की कोमल रश्मियां , चंद्र देव की शीतल किरणों से आच्छादित धरती और शांत वातावरण, तुलनात्मक रूप से किसमें आनंद का अनुभव होगा, बच्चे स्वयं ही शांति का महत्व समझाया जाना चाहिए। यदि बाल और किशोर प्रकृति की तरफ प्रवर्त होंगे तथा संघर्ष के मूल को पहचान लेंगे तो युवा होकर शांतिप्रिय जिम्मेदार नागरिक बनेंगे। आज न केवल देश को, बल्कि संपूर्ण विश्व में शांति की आवश्यकता है, यद्यपि कुछ संस्थायें,कुछ पत्रकारसमूह तथा कुछ धार्मिक संत आदि भी इस ओर प्रयास रत हैं, लेकिन और भी अधिक प्रयास होने चाहिए। तो आईये हम सब मिलकर अपनी अपनी ओर से विश्व शांति की दिशा में एक छोटा ही सही, पर सार्थक प्रयास करना प्रारंभ करें। - भोपाल

सिर्फ मूल - शांति ही है

-दुल्कान्ति समरसिंह

गगन पापा हैं, चाँदनी अम्मा है,
भुवन भैया है- हमारा .....
पवन प्रेमी है, बहन वर्षा है,
विश्व मकान है- हमारा ......

भूमि शय्या है, वृक्ष यार हैं ,
लताएं उनकी बीवियाँ हैं,
मंदिर मंज़िल है, गिरजा शरण है
देव मन में है, हम हमारे हैं।

नदिया चारुता है, समुद्र भाग्य है,
लोग शक्ति है हमारी
ज्ञान सहारा है, एकता आधार है,
प्रगति के लिए- दुनिया की।

उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी, पश्चिमी
सारी दिशाएँ हमारी हैं।
किसी के बीच में भेद नहीं है,
सिर्फ़ मूल - शांति ही है।

_ढाका (बांग्लादेश)

सारा विश्व शांति दूत है

चंचलिका शर्मा

शांति शब्द से अभिप्राय है चारों ओर निस्तब्धता ही नहीं बल्कि हर दिल से एक दूसरे के प्रति कटु भाव को त्यागना और लड़ाई झगड़े, आपसी द्वेष आदि से बचना। विश्व जो कई देशों या राष्ट्रों से मिलकर बना है। विश्व शांति के लिए सबसे पहले हर देश के, हर राज्य के, समाज व घरों के मध्य ऊंच नीच, जात पात, अमीर गरीबी के बेतुके झंझटों से मुक्त होना होगा।

विश्व शांति के लिए आवश्यक है कि लोगों के लिए हितकारी नियम जो भी बने वह सबके ऊपर लागू हो। आज चारों ओर असमानता की लड़ाई है। इस दृष्टिकोण से बहुत पहले से ही मनुष्य को आय की दृष्टि से तीन श्रेणी में बांटा गया था- १) उच्च वर्ग २) मध्यम वर्ग और ३) निम्न वर्ग। इस प्रकार का वर्गीकरण जाने कबसे और किसकी वजह से लागू हुआ है। अनुमानत: वर्ण व्यवस्था ने समाज को जातियों में बांट दिया। पुराने काल में ज़मीदार प्रथा चलती थी बाकी सब गुलाम थे। देश की आज़ादी के बाद कानून की व्यवस्था के साथ हर नियम की अलग अलग धारा होती है। उसी के आधार पर कानूनी कार्रवाई चलती है। इसी आधार पर शनै:-शनै: जाति प्रथा का खात्मा होता गया लेकिन समाज में शांति स्थापित नहीं हो सकी क्योंकि वर्गों में बंटे समाज में झगड़े व दंगा-फसाद बढ़ते गए।

शांति के लिए हर इंसान को पहले नैतिकता का ज्ञान या नैतिक होना आवश्यक है। पूरे राष्ट्र के नागरिकों में अगर नैतिक जागरूकता हो जाये तो कहीं भी दंगा, फसाद, द्वेष आदि कुछ भी नहीं रहे। बस एक दूसरे के संग प्रीत के भाव हों।

आज अनैतिकता की वजह से भारत के कुछ लोग विदेशों से तस्करी कर रहे हैं। भारत के पुरानी ऐतिहासिक चीज़ों को बेच रहे हैं निजी स्वार्थ, पैसों के लिए। इनको कड़ी से कड़ी सज़ा मिलनी चाहिए। कुछ समय से मानव तस्करी में भी भारी वृद्धि हुई है जिसका शिकार महिलाएं हो रही हैं। श्रमिकों की तस्करी एक अलग ही मुद्दा है। इससे भी समय-समय पर शांति भंग होते देखी गई है।

देश के लोग अगर आपस में एक जुट होकर सद्भावना रखें, देश की उन्नति के लिए विचार करें तो विदेशों के सामने भारत की एक जुटता नज़र आयेगी। इसी तरह अन्य देशों के आचरण में अगर नैतिकता कायम रहे तो विश्व शांति के लिए कोई विडम्बना ही नहीं रहे।

सही मायने में विश्व शांति का अर्थ है सभी देश एक दूसरे के साथ सौहार्द पूर्ण रहे, नागरिक खुश रहें। दरअसल शांति का तात्पर्य ही है सामाजिक मित्रता और सद्भाव जहाँ हिंसा, शत्रुता, घृणा जैसी नकारात्मक गति विधि नहीं होती। शांति का तात्पर्य व्यक्तिगत से लेकर सामाजिक और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हो सकता है। संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना में भारत सबसे बड़ा योगदान कर्ता है। १९५० में संयुक्त राष्ट्र संघ के अस्तित्व में आने के समय से ही भारत संयुक्त राष्ट्र संघ के शांति स्थापना मिशनों में सबसे अधिक सैनिकों का योगदान करने वाला देश रहा। अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस की स्थापना १९८१ में संयुक्त राष्ट्र संघ महासभा द्वारा की गई थी।

अंत में सकारात्मक सोच के साथ यही कहना होगा कि युद्धों का खात्मा हो और विश्व शांति कायम रहे। हर इंसान इसके प्रति जागरूक रहे।

हर नागरिक एक शांति दूत है।
सारा समाज ही शांति दूत है॥
शांति ईश्वरीय उपासना जैसा।
मुष्टि में सारा विश्व शांति दूत है॥

-वडोदरा, गुजरात

विश्व शांति हेतु त्यौहार मनाएं

विष्णु ने काटा असुर सिर,
सिर गाड़ दिया मंदराचल पर
जीत सभी संक्रान्ति पर्व मनाये,
रवि उत्तरार्द्ध होकर मकर जाए ।

चीनी की पट्टी, गुड़ का डुन्डा,
तिल का लड्डू मन को भाये।
कुरई में रखकर लाई चूरा,
घी दही संग खिचड़ी खाये।

राज्यों में अनेक नाम प्रसिद्ध,
कहीं खिंचड़ी कहीं लोहड़ी तो,
कही पोंगल माघी, उत्तरायण,
देशवासी मकर संक्रान्ति बुलाए।

घर साफ कर रंगोली सजाकर,
वर्षा धूप कृषि की अर्चना कर।
अनेक परम्परा, रीति का पालन,
सूरज, गौमाता बैल को हैं पूजते ।

पोंगल तमिल समुदाय त्योहार,
फसल कटाई सम्पन्न व्यवहार।
बुरी आदत छोड़ने का संकल्प,
विश्व शांति हेतु त्योहार मनाए।

-प्रतिभा पाण्डेय 'प्रति' चेन्नई

विश्व शांति की अनवरत चाह

डॉ सीमा अग्रवाल

लौकिक व्यवस्था में मनुष्य भौतिक इच्छाओं को त्यागे बिना शांति का अनुभव नहीं कर सकता। इतिहास गवाह है कि हर देश के शासक चाहते हैं कि उनका देश युद्ध की स्थिति में सदैव विजयी रहे। वास्तव में देखा जाए तो पूर्ण शांति विजय अथवा पराजय दोनों स्थितियों में संभव नहीं है। वह तो इन दोनों विचारों से पूर्व का विचार है। यदि कोई देश युद्ध में विजयी होकर अपार वैभव से संपन्न हो जाता है किंतु वहां के नागरिकों में अशांति बनी रहती है तो अशांति से भरे वैभव की अपेक्षा लाख गुना मूल्यवान है अनपेक्षित शांति जिसमें जय-पराजय का भाव ही नहीं रहता।

हमारे देश में विश्व शांति के लिए शुरू से प्रयास किए जाते रहे हैं। देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के कार्यकाल में इस दिशा में अनथक प्रयास किए गए। इस युग में भारत की पहल पर निर्गुट देशों की एक जुटता के प्रयास किए गए जिससे अमीर और महाबली देशों को कमजोर किया जा सका और विभिन्न देशों के मध्य युद्ध की संभावनाएं टाली जा सकीं।

यह सच है कि हर व्यक्ति को अपनी धरती अपने देश से प्रेम होता है, परंतु दूसरे की स्वतंत्रता का उल्लंघन करना ही अशांति का कारण होता है। हम सब अपने धर्म को उच्च समझते हैं और चाहते हैं कि सब हमारी बात माने जो कि असंभव है। अपने देश से प्रेम करना अच्छा है तभी तो कहा है-

जिसको न निज गौरव
तथा निज देश का
अभिमान है,
वह नर नहीं
नर पशु निरा है और
मृतक समान है ।

अपने देश से प्रेम करें ,साथ ही शांति बनाए रखें । इसके लिए अब विभिन्न देशों, प्रदेश और शहरों में जो विभिन्न खेल प्रतियोगिता होती है, वह हमें प्रतिस्पर्धा भी कराती है और साथ ही अपने अंदर के गुब्बार को निकलने का मौका भी देती है। इसमें कोई जाति, धर्म नहीं, सभी अपनी एक टीम के हिस्सा होते हैं जिसमें आपस में प्रेम, स्नेह, दोस्ती का वातावरण बनता है ।

आज नए युवक, युवतियां विश्व के देशों में नौकरी या पढ़ने जाते हैं। वहां के लोगों से मिलकर उनके धर्म, राष्ट्रीय नीति समझते अपनाते हैं। इससे आपस में एक स्नेह, प्रेम का वातावरण उत्पन्न होता है जो कि विश्व शांति का रूप लेता है। अब लोग विभिन्न धर्म, विभिन्न देशों के युवक युवतियां आपस में विवाह कर रहे हैं। वह सुखी जीवन व्यतीत कर रहे हैं। यह विश्व शांति की दिशा में एक अच्छी पहल है, अधिकतर लोगों की सोच यही रहती है कि शांति बनी रहे ।

अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस इसी सोच के आधार पर बनाया गया है ,जिसमें विभिन्न देशों के मध्य युद्ध या किसी अन्य कारण से ना हिंसा हो, ना घृणा पनपें बल्कि प्रेम और भाईचारे की भावना में अभिवृद्धि हो। विश्व शांति दिवस २१ सितंबर को इसी उद्देश्य से मनाया जाता है।

बिना प्रेम और अहिंसा के विश्व में शांति स्थापित नहीं हो सकती और शांति के अभाव में व्यक्ति के मस्तिष्क का विकास भी असंभव है। सभी देश शांतिपूर्ण सौहार्द पूर्ण और सह अस्तित्व की भावना के साथ एक दूसरे की एकता, संप्रभुता, अखंडता का सम्मान करें तो विश्व शांति कायम रह सकती है। संघर्ष और आतंक अशांति के इस दौर में शांति तभी बनेगी जब एक राष्ट्र, दूसरे राष्ट्र के निर्णयों में हस्तक्षेप ना करें क्योंकि वह उसका स्वतंत्र मत है।

विश्व शांति का प्रमुख उद्देश्य है। विश्व का कल्याण। द्वेष, असहिष्णुता, अविश्वास, असंतोष, स्वार्थ, आदि अनेक अवगुणों से विश्व में अशांति फैलती है। हम शांति चाहते हैं तो हमें इसका प्रारंभ अपने परिवार और समाज से करना होगा। प्रदेश, देश, फिर विश्व की ओर शांति की दिशा में बढ़ना चाहिए। शांति का पाठ हमारे राष्ट्रीय दर्शन का मूल तत्व है। भारतीय दर्शन में विश्व बंधुत्व के अंतर्गत दया, प्रेम, सौहार्द, मित्रता और करुणा का उद्देश्य विश्व शांति में निहित है। तदंतर विश्व एक परिवार है। आदिकाल में भारत ने प्रथम विश्व गुरु की भूमिका का निर्वहन कर विश्व में अपना डंका बजाया। आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती जिनके प्रथम वाक्य 'मेरे अमेरिकी भाइयों और बहनों' का पूरे विश्व ने स्नेह के साथ स्वागत किया जिससे सबका दिल भर आया । यही संदेश स्वामी विवेकानंद का था जिनकी जयंती हम राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाते हैं। शांति की अनवरत चाह हमारे हर नागरिक के हृदय में अनुप्राणित हो। यही ध्येय विश्व के प्रत्येक व्यक्ति का हो, तो विश्व शांति स्थापित होगी। – भोपाल

विश्व शांति के लिए शिक्षा: नई पहल

वंदना सहाय

महात्मा गाँधी के शब्दों में- अगर हम विश्व को वास्तविक शांति का पाठ पढ़ाना चाहते हैं, तो हमें शुरूआत बच्चों से करनी होगी या फिर मारिया मान्टेसरी के शब्दों में- सारी शिक्षा शांति के लिए ही है।

पूरी विद्यालयी पाठ्यचर्चा में शांति का परिदृश्य मूलभूत हो, ऐसा सोचने का समय आ गया है। शांति के लिए शिक्षा कई मायनों में शांति-शिक्षा से अलग है। शांति -शिक्षा से भिन्न शांति के लिए शिक्षा शांति की संस्कृति को बढ़ावा देने के लक्ष्य को शिक्षा के उद्यम को आकार देने के उद्देश्य के रूप में मानती है। यदि स्पष्ट दृष्टि और लगन के साथ शांति के लिए शिक्षा को लागु किया जाए, तो वह सीखने की प्रक्रिया को अत्यधिक आनंददायक और सार्थक बना सकती है।

शांति और शांति के लिए शिक्षा भी अब परिभाषित हो चले हैं और विद्यालयी पाठचर्या में शांति के लिए शिक्षा को संक्षेप में ही सही शामिल किए जाने की आवश्यकता को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में रखकर देखा गया है।

ऊँची कक्षाओं में शांति के लिए शिक्षा दिये गए इन बिन्दुओं पर ध्यान केंद्रित कर सकती है-

(क) हिंसा के कारणों, उसके अभिव्यक्तियों और तरीकों की समझ,

(ख) मुद्दों की वस्तुनिष्ठ समझ हासिल करने का कौशल और

(ग) शांति पर एक वैश्विक दृष्टिकोण का विकास।

शांति के लिए शिक्षा के कार्यान्वयन को प्रभावशाली और आनन्दयक बनाने के लिए मेरे कुछ सुझाव हैं। शांति के लिए शिक्षा को आकार देने वाली कुछ आधारिक मान्यताएँ हैं-

१. विद्यालय शांति की पौधशालाएँ हो सकते हैं,

२. शिक्षक सामाजिक सुधारक हो सकते हैं,

३. शांति के लिए शिक्षा पूरी शिक्षा को मानवीय बना सकती है,

४. शांति के कौशल और उसका रूझान जीवन व्यापी गुणवत्ता का कारण बनते हैं और

५.न्याय शांति का अंतरंग हिस्सा है।

शांति के लिए शिक्षा को एक जनांदोलन का रूप देने की संस्तुति की गई है। कुछ चेतावनियाँ भी दीं गईं हैं। जैसे कि,शिक्षा के उद्यम पर सामाजिक और लैंगिक अन्याय के छींटे नहीं होने चाहिए, क्योंकि अन्याय के छींटों से दागदार बनी प्रक्रिया शांति का वाहन नहीं हो सकती।

बच्चों के मस्तिष्क को, जो भविष्य के नागरिक हैं, हिंसा से विकृत होते रहने के लिए छोड़ देना, एक गंभीर समस्या है, जिसे स्वीकार किया जाना चाहिए और यथोचित गंभीरता और तत्परता से संबोधित करना चाहिए। शांति के लिए शिक्षा जैसी नई पहल को व्यापक दृष्टिकोण और दृढ़संकल्प के साथ लागु किया जाना चाहिए। कामचलाऊ तरीके से की गईं कोशिशें शांति को सतही बनाएँगीं और प्रभाव-क्षमता को लेकर हँसी उड़ाने वाले रवैये को बढ़ावा देंगे।

शांति के लिए शिक्षा जीवन के लिए शिक्षा है और वह जीविका के लिए प्रशिक्षण मात्र नहीं है। उसका उद्देश्य है, लोगों को ऐसे मूल्यों, कौशलों और अभिवृतियों से लैस करना, जिनसे उन्हें दूसरों के साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार रखने वाले पूर्ण व्यक्ति और उत्तरदायी नागरिक बनने में मदद मिले।

विश्व शांति के लिए शिक्षा में शांति की बात जिस रूप में कर रहे हैं, उस रूप में वह शिक्षा को गढ़ने-सँवारने वाली दृष्टि बन कर उभरती है। यह शिक्षा के आदान-प्रदान की प्रक्रिया में आने वाले एक युगांतकारी बदलाव का संकेत है। वर्तमान समय में शिक्षा का उद्यम बाजार की शक्तियों से नियंत्रित है। शांति के लिए शिक्षा को बाजार से कोई परहेज नहीं, लेकिन यह बाजार को शिक्षा के उद्देश्य के रूप में नहीं देखती। बाजार हमारे जीवन-संसार का हिस्सा भर है। शांति के लिए शिक्षा, जीवन के लिए शिक्षा है।

ऐतिहासिक रूप से नैतिक शिक्षा और मूल्य शिक्षा शांति के लिए शिक्षा के पूर्वज हैं। इनके काफी कुछ एक-सा है। मूल्य और अभिवृतियाँ शांति की संस्कृति का निर्माण करने वाली भवन सामग्री की तरह हैं। शांति के लिए शिक्षा पढ़ाई के भार में खासी कमी लाने की बात करती है, ना उसे बढ़ाने की। शांति जीने के आनंद को मूर्त रूप प्रदान करती है। शांति के दृष्टिकोण से देखे तो सीखना एक आनंददायक अनुभव होना चाहिए। आनंद ही जीवन का सार है। शांति गति से असंबद्ध नहीं है। हमारे संसार में जल्दबाजी और चिंता सीखने के आनंद को नष्ट करती है और जीवन तथा सीखने के सामंजस्य को महत्व नहीं देती। आज इसी कड़वे सच की वजह से विद्यार्थियों के बीच आत्महत्या की घटनाएँ लगातार बढ़ती जा रहीं हैं।

शांति के लिए शिक्षा में 'मूल्य शिक्षा' भी समाहित है, लेकिन दोनों एक ही नहीं हैं। शांति मूल्यों की संगति के लिए प्रासंगिक तौर पर उपयुक्त और लाभदायक शिक्षा शास्त्रीय बिन्दु है। शान्ति मूल्यों के उद्देश्यों को ठोस रूप देती है और उनके आंतरीकरण को प्रेरित करती है। इस तरह के ढाँचे के अभाव में अधिगम प्रक्रिया में मूल्यों का समावेश हो ही नहीं पाता। इस तरह शांति के लिए शिक्षित करना मूल्य शिक्षा को संदर्भ प्रदान करने और संचालित करने की आदर्श रणनीति है।

मूल्यों का आंतरीकरण अनुभव के द्वारा होता है, जिसका

कक्षा-केंद्रित शिक्षण और शिक्षण के पूर्णतया संज्ञानात्मक उपागम में अभाव पाया जाता है। शांति के लिए शिक्षा सीखने की प्रक्रिया को क्लास रूम की सीमा से मुक्त करने और इसे खोज के आनंद से अनुप्राणित जागरूकता के उत्सव बदलने की माँग करती है। हम स्थानीय, राष्ट्रीय और भूमंडलीय स्तर पर अभूतपूर्व हिंसा के युग में जी रहे हैं। यह एक गंभीर बिंदु है कि विद्यालय, जिन्हें शांति की पौधशाला बनना था, हिंसा भड़काने-फैलाने के केंद्र बन गए हैं। अपने अनुभवों के आधार पर विद्यालयी परिवर्तन व्यवस्था में आए बदलावों पर एक शहरी अध्यापक का कहना- हिंसा में अप्रत्याशित उछाल आया है। बच्चे जिन शब्दों का प्रयोग करते हैं, वे हिंसक हैं। उनके रिश्ते हिंसक हैं। लेकिन मैं उन्हें दोष नहीं देती। उनके घर ही हिंसा को बढ़ावा देते हैं।

शांति व्यक्ति से शुरु होकर परिवार, समुदाय, राष्ट्र और वैश्विक ग्राम तक फैलती जाती है। इसलिए शांति की संस्कृति को प्रोत्साहित करने में दो स्तरीय रणनीति ही काम आ सकती है। इसके लिए समाज के सदस्यों को हिंसा की बजाय शांति की ओर उन्मुख करने के साथ ही सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था को भी शांति की ओर उन्मुख करने की जरूरत है। हमारे जीने का तरीका शांति के अनुशासन से ही निर्देशित होना चाहिए।

शिक्षा उपरोक्त दोनों रणनीतियों के प्रभावकारी होने के लिए जरूरी है। इसके लिए शिक्षा को सूचना के मालेगाम से परे जागरूकता के उत्सव में जाना होगा और इस काम को शांति के लिए शिक्षण ही सबसे उत्तम ढंग से परिणत कर सकती है। शांति की संस्कृति के प्रोत्साहन के लिए शांतिदशक के रूप में मनाए जाने का निश्चय संयुक्त राष्ट्र की महासभा ने १९९९ में किया था। युनेस्को ने २०००-२०१० को दुनियाभर के बच्चों के बीच शांति और अहिंसा की संस्कृति को बढ़ावा देने वाला अंतर्राष्ट्रीय दशक घोषित किया।

पिछले पाँच दशकों में अनेक बार शांति के लिए शिक्षा की पुरजोर तरीके से वकालत की जा रही है। इसमें दो मील के पत्थर हैं- अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव, शांति, मानवाधिकार और मौलिक स्वतंत्रताओं के लिए शिक्षा को लेकर युनेस्को की सिफारिशें (१९७४) और शांति, मानवाधिकार और लोकतंत्र के लिए शिक्षा से संबंधित युनेस्को की १९९४ की कार्य योजना, जिसे १४४ देशों की स्वीकृति मिली थी।

१९५३ में अंतर्राष्ट्रीय मेल-मिलाप और शांति को प्रोत्साहित करने के लिए युनेस्को द्वारा ए. एस. पी. नेट की शुरुआत हुई। २००३ तक १७५ देशों के नर्सरी स्कूलों से लेकर अध्यापक प्रशिक्षण केंद्र तक ७५०० संस्थानों को ए. एस. पी नेट में सम्मिलित किया जा चुका था। यह नेटवर्क शांति, स्वतंत्रता, न्याय और मानव-विकास के लक्ष्य के प्रति समर्पित है।

'शांति और निरस्त्रीकरण शिक्षा' पर एक नई पायलट परियोजना चार देशों में शुरु की गई है। यह परियोजना संयुक्त राष्ट्र के निरस्त्रीकरण मामलों के विभाग (यू. एन. डी. डी.ए.) और शांति के लिए हेग अपील (एच ए पी) के द्वारा संचालित है और वे चार देश हैं- अल्बानिया,नाइजर, पेरु और कंबोडिया। इज़राइल स्थित हिफ़र विश्वविद्यालय में सेंटर फॉर रिसर्च ऑन एजुकेशन फॉर पीस (सी.ई.आर.पी.ई) १९९८ से काम कर रहा है। यह संस्थान शांति के लिए शिक्षा पर विद्वज्जनोचित अध्यन हेतु अंतरानुशासनिक और अंतरराष्ट्रीय फ़ोरम के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहा है। इसने शांति के लिए शिक्षा पर कई परियोजनाओं को पूरा किया है। न्युयार्क स्थित दि अर्थ एन्ड पीस एजुकेशन एसोसिएट्स इंटरनेशनल (ई. पी. ई.) एक अन्य संगठन है, जो शांति से संबंधित बुनियादी मूल्यों, जैसे कि ठहराव, अहिंसा, सामाजिक न्याय, समता, और निर्णय-सहभागिता को बढ़ावा देता है। इसके अलावे भी पूरी दुनिया में कई संगठन शांति के लिए काम कर रहे हैं।

हमारे यहाँ भी अहिंसा शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की धरोहर और द्वंद्व को निपटाने के गाँधी जी के तरीकों की एक सांस्कृतिक परंपरा रही है, जो दुनिया के अन्य हिस्सों में भी शांति प्रवक्ताओं और नायकों को प्रेरित करती है।

गैर सरकारी संगठन (एन. जी. ओ.) मानवाधिकार, जेंडर, भेदभाव, पर्यावरण जैसे शांति अध्ययन के विभिन्न क्षेत्र देते आए हैं, लेकिन स्कूल-स्तर की शिक्षा पर यथेष्ट प्रभाव डालने में ये असफल रहें हैं। इनकी प्रभावोत्पादकता को बढ़ाने के लिए ऐसे सभी स्थानों के बीच समुचित नेट वर्किंग की जरूरत है।

-लंदन/नागपुर

विश्व शांति के लिए

डॉ.नीरजा श्रीवास्तव 'नीरू'

धधक धधक धधक रहा ,
सूर्य है दहक रहा,
आसमान के ललाट पर ,
नीले नीले भाल पर ,
चमक चमक चमक रहा,
नित्य और सतत रहा
वो विश्वरचेता प्रतीक
उससे ही सारी सर्जना,
उससे ही सारी सृष्टि।
तू कर्तव्य से मुंह मोड़कर
संस्कार नियम छोड़कर
निर्लज्जता के उत्कर्ष में
श्रीहीन सा खड़ा हुआ
दिग्दिगंत में विनाश का
संहार,आतंक फैला रहा
अपनी जीत सोच सोचकर
बिगुल उसका तू बजा रहा।
और अब करेगा क्या,
प्रेम, स्नेह ,विस्मृत सब
प्रतिस्पर्धा में लिप्त अब
औरों का नोच खसोट के
वैभव अपना दिखा रहा
स्वार्थ में तू सना हुआ
बस अपने में गुना हुआ
प्रकृति और जीवों पर ,
रक्त पात ही करता रहा।
मनस्विता का ह्रास कर
तू विध्वंस ही करता रहा
अनदेखा कर रौंद कर
अपना भवन भरता रहा
पूजा इबादत कर जितनी
गंगा क्षिप्रा सरयू नदी,
तीर्थ कर आओ सभी
किंतु तार न पाये कभी।
वंचना प्रवंचना छोड़ दे
पाखण्ड रीति को तोड़ दे
तू मनुष्य है तू सभ्य बन
मानवता की ज्योति बन
तू जीव है तू जीवों से
प्रीत व सहानुभूति रख
मात्र अपने लिए ही नहीं
सबके भले की सोच रख।
धरती को बचा ले आज
मानवता की रख ले लाज
विश्व शांति के लिए एक बन
कह वसुधैव कुटुंबकम्।

-फ़रीदाबाद (हरियाणा)

मानवता के संरक्षण हेतु विश्व शांति

दीप्ति सक्सेना

आज का युग वैश्विक अराजकता और संघर्षों से भरा हुआ है। समाचार पत्रों का पूरा लिबास खून से छींटों, निर्वासन की पीड़ा, चीख-पुकार, भूख, व्याभिचार और असंतोष से रंगा हुआ होता है। केवल भारत में ही पाकिस्तान और चीन द्वारा घृणा का नाग सौहार्द को नहीं निगल रहा है, बल्कि विश्व मानचित्र पर जहाँ नज़र डालो, वहीं तबाही का अग्नि कुंड जल रहा है।

चाहे रूस-यूक्रेन के बीच जारी युद्ध हो, या बांग्लादेश जैसे देशों में बढ़ती अस्थिरता—इन सभी घटनाओं ने अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों और वैश्विक स्थिरता पर गहरा असर डाला है। इन संघर्षों के भयानक चक्रवात ने न केवल स्थानीय आबादी पर विनाशकारी प्रभाव डाला है, बल्कि पूरे विश्व में भी राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक असंतुलन पैदा किया है। इन हालातों में, विश्व शांति की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक और महत्वपूर्ण हो गई है।

इन संघर्षों की जड़ में कई कारक हैं, जिनमें राजनीतिक अस्थिरता, आर्थिक असमानता, धार्मिक और सांस्कृतिक विभाजन, तथा विदेशी हस्तक्षेप शामिल हैं। सीरिया में गृहयुद्ध की शुरुआत २०११ में हुई, लेकिन यह एक ऐसा संघर्ष बन गया, जिसमें क्षेत्रीय और वैश्विक शक्तियों का हस्तक्षेप लगातार बढ़ता गया। रूस-यूक्रेन युद्ध भी जटिल भूराजनीतिक समस्याओं और राष्ट्रीय स्वायत्तता के मुद्दों से उत्पन्न हुआ है, जिसने न केवल यूरोप बल्कि पूरे विश्व को अस्थिर कर दिया है। संप्रति बांग्लादेश में भी बढ़ती अस्थिरता और आंतरिक संघर्षों के कारण मानवाधिकारों का हनन और राजनीतिक अस्थिरता देखने को मिल रही है। इसी प्रकार विश्व में तरह-तरह के संघर्ष अपना फन फैलाए हैं।

इन संघर्षों का प्रभाव स्थानीय और वैश्विक स्तर पर भयानक रहा है। लाखों लोग विस्थापित हुए हैं, हजारों ने अपनी जान गंवाई है, और असंख्य लोगों की आजीविका तबाह हो गई है। इस तरह के संघर्षों ने वैश्विक खाद्य और ऊर्जा आपूर्ति में विघटन पैदा होता है, जिससे दुनिया भर में महंगाई और आर्थिक अनिश्चितता बढ़ती है।

देश राजनीतिक उथल-पुथल और सांप्रदायिक हिंसा के कारण आंतरिक रूप से कमजोर हो रहे हैं। इन संघर्षों से वैश्विक मानवाधिकार संकट गहराता जा रहा है, और इसका समाधान निकालना अत्यंत कठिन हो गया है।

सर्वेषा स्वस्तिर्भवतु- इस समय, विश्व को उन मूल्यों और सिद्धांतों पर वापस लौटने की आवश्यकता है, जो शांति और सद्भाव को बढ़ावा देते हैं। संयुक्त राष्ट्र जैसी अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है, लेकिन उसे भी बड़ी शक्तियों के स्वार्थ से ऊपर उठकर सही दिशा में कदम उठाने की जरूरत है। बातचीत, कूटनीति और आपसी सहयोग ही ऐसे साधन हैं, जो इन संघर्षों को सुलझाने में सहायक हो सकते हैं।

शांति स्थापित करने के लिए हर देश को अपने हितों और नीतियों का पुनर्मूल्यांकन करना होगा। कूटनीतिक वार्ताओं को बढ़ावा देना, विभिन्न पक्षों के बीच संवाद कायम करना और राजनीतिक अस्थिरता को दूर करने के लिए ठोस कदम उठाना अनिवार्य है। शिक्षा, समावेशी विकास और आर्थिक सहयोग के माध्यम से भी शांति की संभावनाएं बढ़ाई जा सकती हैं।

विश्व शांति कोई दूर का सपना नहीं है, लेकिन इसके लिए वैश्विक नेतृत्व और नागरिक समाज के स्तर पर प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। हिंदुओं के पवित्र ग्रंथ यजुर्वेद में शांति पाठ मंत्र है-

ओम द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिःपृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।

इसमें सृष्टि के समस्त तत्वों व कारकों से शांति बनाये रखने की प्रार्थना की गई है। परंतु आज यह भाव कहाँ है? कहीं न कहीं भौतिकतावाद की अति और आध्यात्मिकता का मखौल उड़ाने की संस्कृति का उत्थान, विश्व में अस्थिरता का कारक है। जब तक विश्व-अंतरिक्ष सर्वत्र शांति का, सबके कल्याण का भाव विलुप्त रहेगा, तब तक स्थितियाँ अनसुलझी रहेंगी।

हिंसा और अराजकता से ग्रस्त इस दुनिया में, शांति केवल तभी संभव होगी जब हम एकजुट होकर इन समस्याओं का समाधान निकालने के प्रयास करेंगे।

विश्व शांति की स्थापना के लिए हमें न केवल संघर्षों को रोकने की दिशा में काम करना होगा, बल्कि ऐसे वातावरण का निर्माण करना होगा जहां संवाद, सहानुभूति और सहयोग को प्राथमिकता मिले।

विश्व शांति ही मानवता के अस्तित्व की कुंजी है, अन्यथा हिरोशिमा और नागासाकी में विनाश का नमूना दशकों पहले दिखा दिया गया है। संसार को रहने योग्य बनाने के लिए विश्व शांति की प्रार्थना हर हृदय में गूंजना अवश्यंभावी है।

–बदायूँ, उत्तरप्रदेश।

विश्व शांति और हमारा भारत

मनोहर सिंह चौहान 'मधुकर'

हर मानव शांति चाहता है। उसे चैन की जिंदगी जीना पसंद है। ठीक इसी तरह विश्व के सभी लोग या यूं कहें विश्व के अधिकतर राष्ट्रों के नागरिक विश्व में शांति चाहते हैं, ताकि मानवता सुख चैन से जी सके। समय-समय पर विश्व शांति के लिए प्रयास भी हुए हैं किंतु वो भी विश्व को पूर्ण शांति प्रदान नहीं कर सके।

विश्व शांति के लिए विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों, दर्शन और संगठनों की अलग अलग धारणा है जो विश्व शांति में बाधक है।

अठारहवीं सदी में विश्व में शांति में रखने हेतु १७९५ में एक विचार विदेशी चिंतक इमेनुअल कांट द्वारा रखा गया तब विभिन्न राष्ट्रों की सहमति नहीं होने के कारण बात आगे न बढ़ सकी। सन १९१४ में एक ब्रिटिश राजनीतिक वैज्ञानिक डीकिंशन ने लिंग आफ नेशन शब्द विश्व शांति संगठन हेतु नाम सुझाया गया। उसके बाद सन १९१८ में फ्रांसीसी अधिकारियों द्वारा एक संगठन की आवश्यकता प्रतिपादित की जिसके द्वारा लिए गए निर्णयों को लागू करने हेतु एक अंतर्राष्ट्रीय सेना की वकालत की गई।

तदंतर १९१९ में एक अंतर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें महिलाओं को समानता अधिकार प्रदान करने का प्रस्ताव पास किया गया जिसके फलस्वरूप महिलाओं को समानता का अधिकार दिया गया।

आगे चलकर विश्व की स्थिति को मद्दे नज़र राष्ट्रों का एक संगठन बनाने की आवश्यकता महसूस की गई जिसके फलस्वरूप एक संस्था संयुक्त राष्ट्र नाम से प्रथम अंतर्राष्ट्रीय संगठन की स्थापना की गई जिसका मुख्य उद्देश्य शांति रचना,शांति स्थापना,शांति रक्षा और राष्ट्र निर्माण था। इसका मुख्यालय जिनेवा था और जिसकी भाषा फ्रेंच और अंग्रेजी नियत की गई थी। यही संगठन और इसके सदस्य देश आगे चलकर विश्व में शांति के उद्देश्य को लेकर १९४५ में संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की गई जिसमें अनेक राष्ट्र सम्मिलित हो गए। जिसका मुख्यालय न्यूयार्क सयुक्त राज्य अमेरिका में है। उस समय के पांच बड़े राष्ट्र चीन,फ्रांस,सोवियत संघ,यूनाइटेड किंगडम और अमेरिका उसके स्थाई सदस्य बने जिन्हे किसी समस्या/ बात या विषय पर निर्णय करने का अधिकार मिला। इस संघ में किसी विषय या समस्या के हल करने ना करने हेतु सभी स्थाई सदस्य एकमत हैं तो वो सबको या संबंधित देश को मानना होगा किंतु किसी विषय पर स्थाई सदस्य देशों में से अगर एक भी सदस्य सहमत नहीं हैं तो असंतुष्ट सदस्य अपने वीटो के अधिकार का प्रयोग कर उसे रोक सकता है भले बाकी स्थाई सदस्यों की सहमति हो तो भी उसे पास नही कर सकते।

आरंभ में इस संगठन में ५१ थे जबकि आज की स्थिति में १९३ सदस्य हैं। इसका कार्य सदस्य देशों के लिए समुचित प्रस्ताव पारित करना है। एक तरह से यह मान्यता प्राप्त राष्ट्रों की लघु संसद है जो सदस्य देशों के लिए सुख शांति और सुरक्षा के लिए कार्य करती हैं जिसके अंतर्गत महा सभा, सुरक्षा परिषद, सचिवालय,ओर अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय और संयुक्त राष्ट्र न्यास परिषद हैं।

इन सबके वावजूद आज विश्व में युद्ध और अराजकता आज अपनी चरम सीमा पर हैं। रूस यूक्रेन युद्ध,इजराइल और हमास के युद्ध,बंगला देश में धर्मांधता हमारे सामने है जो अपने दंभ और ताकत को परिलक्षित करते हैं।

विश्व शांति की राह में कुछ ऐसे कारण बाधक है जिनका निदान किया जाना चाहिए। आज विश्व में धर्म और तेल के नाम पर हिंसा हो रही है तो कही नस्लवाद और हथियारों की प्रचुरता,आबादी का विस्थापन,भुखमरी,अशिक्षा,जनसंख्या वृद्धि ओर एकीकृत अर्थ व्यवस्था और मुक्त अर्थ व्यवस्था होना भी अशांति का और युद्ध का कारण है। विश्व शांति की दिशा में भारत ने संयुक्त राष्ट्र के शांति अभियानों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारत उपनिवेशवाद,विस्तारवाद, रंगभेद और आतंकवाद विरोधी और गुट निरपेक्ष भावना का हिमायती है। साथ ही भारत परमाणु हथियारों पर प्रतिबंध आवश्यक मानता है।

विश्व शांति हेतु कुछ सार्थक प्रयास मन से करना आवश्यक है। साथ ही एक अकाट्य सत्य यह भी है कि मनुष्य में जबतक ईश्वर प्रदत्त रज तम और सत गुण विद्यमान हैं तबतक पूर्ण रूपेण शांति असंभव है जिसका इतिहास गवाह है। विश्व शांति के लिए हमें समता, समानता, बंधुत्व, एक दूसरे का सम्मान और जियो और जीने दो की भावना को फैलाना होगा। यही भावना विश्व शांति हेतु एक दृढ़ सेतु का आधार बन सकती है जो विश्व को शांति की ओर ले जा सकती है। -जावरा

विश्व शांति का सनातन संदेश

डॉ कुमुद श्रीवास्तव
वर्मा 'कुमुदिनी'

हम भारतीय अपनी सभ्यता संस्कृति और संस्कार के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध हैं। विदेशी भी हमारी संस्कृति और वेदों के पठन पाठन व भारतीय पहनावे को पसंद करते हैं। कई देशों में तो भारत के देवी देवता एवं यहां की वेशभूषा को भी अपनाकर लोग भारतीय रंग में रंग जानें को आतुर रहते हैं।

भारत अपनें जलवायु, उपजाऊ भूमि, और वेद पुराण, एवं विज्ञान के कारण विश्व में एक अपनीं अलग पहचान रखता है। यह अमन पसंद देश है। यहां हम दुश्मन को भी गले लगा लेते हैं।

जिस प्रकार विश्व में वर्तमान समय में अशांति फैली है , बड़े बड़े देश आयुध शक्ति एवं सैन्य बल को बढ़ाकर अपना वर्चस्व दूसरे कमजोर देशों पर कायम करते दिख रहे हैं वहीं दूसरी ओर भारत विश्व शांति का उपदेश देता रहा है और आज भी उसी पथ पर अग्रसर है।

भारत प्रति १२वर्ष में महाकुंभ का आयोजन और सनातनधर्म की रक्षा हेतु मंदिरों का नियमित जीर्णोद्धार एवं सदैव सर्व धर्म हिताय भावना रखकर देश के सभी नागरिकों को जाति धर्म से ऊपर रखकर समानता का अधिकार दे रहा है।

एक ओर जहां पड़ौसी देशों में भारतीयों के संग अत्याचार हो रहा है वहीं हमारा देश 'अतिथि देवो भव' एवं रक्षा, संरक्षण व सुरक्षा के नियम को बल देता हुआ सभी नागरिकों (किसी भी धर्भ जाति) के मौलिक अधिकारों की सुरक्षा की बात कर रहा है ।

कहने का तात्पर्य यह है कि भारत देश का अपनी शांति और समृद्धि में वृद्धि के कारण दुनियां में डंका बज रहा है और शांति दूत बनकर विदेशों में छोटे छोटे देशों की लड़ाइयों को सुलझा रहा है वहीं दूसरी ओर बड़े और समृद्धिशाली देश अत्यधिक आयुध निर्माण के एवं गोला बारूद के निर्माण को खपानें हेतु छोटे छोटे देशों को आपस में लड़वाकर अपनीं ताकत के बल पर दुनियां में राज करना चाहते हैं।

एक ओर कई बड़े-बड़े देश विश्व शांति के प्रयास में प्रयत्न न करके विश्व को गर्त में ढकेल रहे हैं जहां छोटे छोटे देश पूरी तरह से निस्तनाबूत हो जा रहे हैंवहीं दूसरी ओर हमारा भारत विकास और निर्माण के रास्ते पर चलकर सौहार्द एवं शांति का संदेश विश्व में फैला रहा है।

आज से ही नहीं वरन् प्राचीन काल में भी भारत से बौद्ध धर्म के एवं अन्य धर्म के प्रचारक अमन और शांति का संदेश पूरे विश्व में घूम घूम कर फैलाते आये हैं किंतु अशांति की नाव पर विनाश की सामग्री लेकर बैठने वाले नाविक अपनीं नाव को अपनीं दुर्बुद्धि एवं जहरीली सोच से अवश्य डुबा देंगें।

मुझे गर्व है कि हमारा देश विश्व शांति हेतु पूरी ईमानदारी से प्रयास तो कर रहा है चाहे वह शिक्षा, चिकित्सा, अन्वेषण, विनिमय, धर्म, या कोई और अन्य क्षेत्र क्यों ना हो। भारत अपनीं एकता, अखंडता और संप्रभुता से विश्व शांति का संदेश दे रहा है आशा है एक दिन भारत हर क्षेत्र में अग्रणी होकर पुनः विश्व गुरु कहलायेगा।

-लखनऊ

विश्व शांति के लिए मानव

मंजुला श्रीवास्तव

थालियाँ परोसी खाने के लिए
एक भगवे के लिए।
एक हरे के लिए
और एक सफेद के लिए।।
अन्नदाता ने कहा -
यह भी जीए, वह भी जीए

चाँद -सूरज- सितारे
सब कुछ हमने साझा किए।
एक ही हवा में सब साँस लिए
कोई बाधा ना रही किसी के लिए।।

मिली -जुली ज़बान
मिली-जुली तहजीब लिए।
निभाती रही साथ
दुनियाँ के हर शख्स के लिए।।

अफसोस फिर भी
सुकून पूरी दुनिया में कहीं नहीं
लड़े सब आपस में कभी ना कभी
यह तस्वीर बदलेगी तभी
इन्सानियत के तराज़ू में
तौले बात हम सभी
क्योंकि विश्व शांति के लिए
इंसानियत से बढ़कर कुछ नहीं .

-नई दिल्ली

सविता व्यास

वैश्विक शांति के वैरी युद्ध

फ़ज़ा ये अमन -ओ -अमान की सदा रखे कायम,
सुनो ये फर्ज तुम्हारा भी है हमारा भी है। -नुसरत मेहंदी।

कितना सच कहा है न नुसरत जी ने! शांति किसी एक के ही प्रयास से संभव नही है, सामने वालों में भी यह जज़्बा होना चाहिए। जब सृष्टिकर्ता ने पृथ्वी की रचना की थी तब उन्हें बिल्कुल भी भान नही होगा कि जिस रसा को उन्होंने स्वर्ग से भी अधिक सौंदर्यवान बनाया है, उसके ही रचित खिलौने उसे कुरूपता की ओर ले जायेंगे। वह वसुधा जहां शान्ति की हरियाली थी, जहां पक्षियों के गीतों की मधुर तान गूंजा करती थी, वहां अशांति का सहरा पसर जाएगा, पक्षियों के मीठे सुरों की जगह परमाणु बम की दहशत नगाड़े बजाएगी।

सोचता होगा जिसे उसने अपनी खूबसूरत रचना समझा था जिसे बुद्धिमान, समझदार और विवेकशील बनाया था वह इतना क्रूर, मंदबुद्धि और अदूरदर्शी निकलेगा। विश्व शांति के सबसे बड़े बाधक हम ही हैं। ईश्वर ने हमें गढ़ा, हम अपना कुनबा बढ़ाते गए। यह कुनबा कबीला बना और बढ़ते कबीले को क्षेत्रफल की जरूरत पड़ी और दूसरे का हक़ छीनने के लिए युद्ध का जन्म हो गया। दूसरे की जमीन, स्त्रियों के लोभ ने रक्त पिपासु बना दिया हमें। धीरे -धीरे इस युद्ध ने सब तबाह करना शुरू कर दिया। आखिर क्यों युद्ध ने आकार लिया, क्यों इतनी वैमनस्यता आई? क्यूं घृणा ने पैर पसारे? कहां खो गया भाईचारा?

दरअसल युद्ध मन में छुपे हुए विकारों का परिणाम है। मन की अशांति ही विश्व पर अशांति का जाल फैलाती है। ये जो सारे युद्ध हैं न मानव मन में ही जन्म लिए हैं। युद्ध कभी भी रहस्यमय शक्ति या दूर बसे ग्रहों की वक्र दृष्टि से नही होते, ये हमारे मन के कुविचारों की देन हैं। हमारे नकारात्मक विचार ही इसके जनक हैं। विश्व में हो रहे, होते आ रहे युद्ध ही अशांति के कारण हैं और इन युद्धों के कारण हैं -

हमारा अहम- अशांति और युद्ध का एक बड़ा कारण हमारा अहम है। चाहे परिवार में हो, देश में भी या विश्व की बात हो यह अहम शांति को दीमक की तरह चट कर जाता है। हमारा अहंकार दूसरों को तुच्छ समझता है। उनकी उन्नति से फुफकार उठता है। उसे स्वयं से कोई आगे न बढ़ जाये इसका भय बना रहता है। वह सह नही पाता अपनी अवहेलना, अपनी बात का नजरअंदाज किया जाना उसे तिलमिला देता है। वह अपने अहंकार को चोट पहुंचते देख क्रोधित हो जाता है और उसे नेस्तनाबूद करने के लिए आक्रमण कर देता है। वह क्रोध में इतना अंधा हो जाता है कि दूरगामी परिणाम के बारे में सोचना ही बंद कर देता है। अधिकांश युद्ध इसी अहम और अहंकार के कारण हुए हैं और आज भी हो रहे हैं। रूस -यूक्रेन का युद्ध इसका ताज़ा उदाहरण है।

ईर्ष्या-द्वैष और लोभ -अशांति का एक कारण ईर्ष्या भी है। दूसरों की उन्नति, सुख -समृद्धि, विकास देखकर जाने कब ये हृदय में अंकुरित हो जाती है। इस ईर्ष्या ने घर तो बरबाद किए ही हैं इसने देशों के बीच पनप कर वैश्विक शांति को घाव दिए हैं। कई देश अपने से अधिक उन्नत देशों की बढ़ती समृद्धि सह नही पाते हैं और उस देश में सांप्रदायिकता, आतंकवाद, वैमनस्यता फैलाते हैं जो बड़ी वजह बन जाता है अशांति का। किसी देश का अत्यंत समृद्ध होना भी उस देश की शांति के लिए खतरा बन जाता है। हमारा भारत जो सोने की चिड़िया के नाम से जाना जाता था, अपनी समृद्धि के कारण इस शांतिप्रिय देश को बार -बार लुटेरों के आक्रमण का दंश सहना पड़ा। जैसे गजनवी, गौरी आदि।

आर्थिक और सामाजिक असमानता -एक कारण यह भी है अशांति का। आज एक वर्ग या देश अधिक धनी और एक वर्ग गरीबी रेखा से काफी नीचे है जिसके कारण भी असंतोष उत्पन्न होता है, सामाजिक भिन्नता भी असंतोष लाती है। वर्गभेद, जाति भेद, आर्थिक असमानता, सामाजिक असमानता धीरे -धीरे विद्रोह को विकसित करने के लिए उर्वरक बन जाती हैं। ऐसे में असमानता का शिकार वर्ग क्रांति का रास्ता अपना लेता है, हिंसा का सहारा लेता है।

धर्मांधता- धर्मांधता भी एक कारण बन रहा है अशांति का। धर्म जिसकी स्थापना समाज में नैतिक गुण विकसित करने और शांति स्थापित करने के लिए की गई थी आज उसी के कारण मानव असहिष्णु हो रहा है। अपने धर्म को ही सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए हिंसक होता जा रहा है। कट्टरता इतनी बढ़ गई है कि करुणा को उसने अपने जबड़े में जकड़ कर रख लिया है।

स्वाभिमान को चोट - अगर किसी सरल हृदय, ईमानदार व्यक्ति का बार -बार दोहन किया जाए, यदि उसके स्वाभिमान को घायल किया जाए, यदि अहंकारी बार बार उसकी विनम्रता को कायर कह उपहास उड़ाए तो आखिर में स्वाभिमान अपना फन काढ कर डस ही लेता है। राम -रावण का युद्ध, महाभारत का युद्ध इसी का परिणाम थे। बहुत से ऐसे कारण हैं जो मानव -मन की खुराफातों से ऊपज कर घृणा, वैमनस्यता को जन्म देते हैं। युद्ध आज ही से नही हो रहे हैं। सदियों से इनका अस्तित्व है पर बीसवीं सदी की शुरुआत से अधिक हिंसा हो रही है। प्रथम विश्व युद्ध, द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिकाओं से भी मानव जागृत नही हो पाया। हम देखें तो १९४५ से अब तक १५० युद्ध हुए हैं, २० मिलियन से अधिक लोग मारे गए हैं।

विश्व हिंसा तो बढ़ी ही है, घरेलू हिंसा ने भी बड़ा आकार ले लिया है। विकसित राष्ट्र राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर सैन्य व्यय बढ़ाते ही जा रहे हैं। ये आर्थिक उन्नति, सामाजिक उन्नति, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा की उन्नति के लिए जितना खर्च करते हैं उससे बीस गुना अधिक सैन्य व्यवस्था पर खर्च कर रहे हैं। विकासशील देशों का

भी यही हाल है। आतंकवाद, तथा अलगाववादी आंदोलन से निपटने के लिए हमारा बहुमूल्य धन व्यर्थ हो रहा है और स्वास्थ्य, शिक्षा, आवास, रोजगार जैसों क्षेत्रों में प्रगति धीमी पड़ गई है। फिर भी हिंसा, प्रतिहिंसा में दिन -ब -दिन बढ़ोतरी हो रही है। हर देश, हर व्यक्ति भीतर से डरा हुआ रहता है।

हम गौर करें तो पाएंगे कि कोई भी आमतौर पर युद्ध की इच्छा नही रखते हैं। युद्ध अधिकतर सैन्यवादियों या तानाशाहों, अराजक प्रवृति के लोगों के द्वारा आम जनता पर थोपा गया है। दो विश्व युद्ध की विभीषिका सहने के बाद सबको महसूस होने लगा कि युद्ध किसी भी तरह से अच्छे नहीं हैं। ये केवल विनाशक हैं, इससे न केवल मानव मृत्यु होती है साथ ही पर्यावरण, आर्थिक स्थिति पर लंबा बुरा प्रभाव पड़ता है। एक देश जिसे युद्ध से गुजरना पड़ता है वह अपने विकास से सौ साल पीछे चला जाता है। सारी व्यवस्था तहस -नहस हो जाती है। विश्व युद्ध के बाद ही यह निर्णय लिया गया कि युद्ध रोकने के लिए किसी तंत्र का निर्माण करना होगा। युद्ध से बचने के लिए, ऐसी स्थिति को निपटने के लिये किसी ढांचे का निर्माण करना होगा।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ऐसे संघ की बहुत जरूरत महसूस हुई जो युद्ध को रोक सके। युद्ध के कारणों को समझकर दूर कर सके तब १९४५ में संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की गई। जिसका उद्देश्य यह रखा गया कि वैश्विक शांति के लिए विश्व के सभी देशों के बीच सहयोग, समझ, भाईचारा का विकास करना होगा। सभी लोगों के हक़ में खुशहाल जीवन हो सके, सामाजिक विकास, आर्थिक उन्नति में एक दूसरे की सहायता करें। स्वास्थ्य, शिक्षा, मानव सुरक्षा में योगदान करें। निरस्त्रीकरण पर बल दिया गया। इस दृष्टि से हम देखें तो गांधीवादी दर्शन का प्रभाव दिखता है।

गांधीवादी विश्वव्यवस्था का मुख्य उद्देश्य विश्व में शांति की स्थापना करना है। गांधीजी के विचारों को हम गहनता से पढ़े, समझे तो यही पाएंगे कि अगर उनके मार्ग पर चलें तो विश्व से वैमनस्यता, अराजकता, अशांति खत्म हो जायेगी। गांधीजी कहते थे युद्ध अधर्म है वे अहिंसा को ही धर्म मानते थे। वे कहते थे कि ये युद्ध कुछ अल्पसंख्यक द्वारा बहुसंख्यक पर थोपा जाता है। मानव मूलतः स्वभाव से अहिंसक है। हृदय से सब शांति ही चाहते हैं। गांधीजी चाहते थे सभी समस्याओं को नैतिक साधनों से ही सुलझाना चाहिए। वे कहते थे कि हिंसा से हिंसा ही बढ़ती है। उनका पूर्ण विश्वास था कि हिंसा को अहिंसा से ही मिटाया जा सकता है। अशांति और युद्ध के कारकों को ही हमें समूल मिटाना होगा। वे मानते थे कि वास्तविक शांति के लिए सामाजिक समानता, आर्थिक समानता, और मानवाधिकार की जरूरत है, अच्छी न्याय व्यवस्था भी होना जरूरी है तभी समाज में असंतोष रुकेगा।

गांधीजी कहते थे कि शांति के लिए हमें व्यक्तियों का नैतिक उत्थान करना होगा। मनुष्य में दिव्यता है बस हमे उसे जागृत करना है। उन्हें हिंसा के परिणाम के प्रति जागरूक करना होगा, उन्हें नैतिक दृष्टि से सम्पन्न करना होगा ताकि वे सबको समान समझे, दूसरों की अहमियत को समझे, सुख -दुःख को समझ सके। उनका विचार था कि शांति के लिए महाशक्तियों को स्वयं को निरस्त्र करना होगा, विकासशील देशों को भी शस्त्र एकत्र करने में धन व्यर्थ न कर उनकी जनता के आर्थिक सामाजिक विकास और स्वास्थ्य, शिक्षा पर व्यय करना चाहिए क्योंकि अस्त्र कभी भी शांति लाने में सहयोग नही करते हैं।

गांधी जी के अनुसार शांति के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सभी देशों को स्वतंत्रता देनी होगी, उनके स्वाभिमान को सम्मान देना होगा। गांधीजी से पूछा गया था कि जब कोई देश दुश्मनों से घिरा हुआ है तो वह अहिंसा के मार्ग पर कैसे चलेगा? उन्होंने उत्तर दिया था कोई दुश्मन नही है, केवल विरोधी हैं जिन्हें आत्मबल से जीता जा सकता है न कि पाशविक बल से। वे कहते थे मानव मूलतः अच्छा है, उसमें दिव्य तत्व मौजूद हैं, अहिंसक होने की क्षमता है। हमें बस उनमें नैतिकता लानी होगी, उनके मानवीय मूल्यों को जागृत करना होगा। कोई भी युद्ध सुखद परिणाम नही ला सका है। पछतावा ही देता है। उन्होंने कलिंग युद्ध का उदाहरण दिया था कि इस युद्ध के विनाशकारी परिणाम को देखकर सम्राट अशोक भी दहल गया था अंततः अहिंसा के मार्ग पर चल पड़ा था।

निष्कर्ष यही है कि वैश्विक शांति को सबसे ज्यादा नुकसान युद्ध से होता है। युद्ध से कभी हल नही निकल सकता है। यह विध्वंसकारी तो है ही पर यह मन -मस्तिष्क पर अत्यंत बुरा प्रभाव छोड़ जाते हैं। युद्ध से किसी को पराजित नही किया जा सकता है, हारने वाला वास्तविकता में हार नही मानता है वह प्रतिशोध की भावना में झुलसता रहता है और ताक में रहता है कब प्रतिशोध लिया जाए। शांति पाने के लिए शांति ही एक रास्ता है। हालांकि कभी -कभी युद्ध आवश्यक हो जाते हैं, जब सामने वाला बिल्कुल समझौते को तैयार नही होता है तो हमें मजबूरी में क्रूर फैसला लेना पड़ता है जैसे राम -रावण युद्ध और महाभारत का युद्ध। इन युद्धों को रोकने के लिए राम और कृष्ण ने पूरी कोशिश की थी पर रावण और दुर्योधन के अहंकार और ज़िद ने संभव नही होने दिया और प्रेम की बांसुरी थामने वाले कृष्ण को अर्जुन को युद्ध के लिए बाध्य करना पड़ा और विनम्र राम को भी युद्ध करना पड़ा यद्यपि युद्ध के परिणाम से सभी विचलित थे। देखिए ये युद्ध भी कहां खत्म कर पाए समाज में व्याप्त क्रूरता को, पाशविकता को! रावण सी प्रकृति वाले असंख्य रावण उग आए धरा पर, दुर्योधन, दुःशासन जैसे तानाशाही, अहंकारी, बलात्कारी आज विश्व के हर कोने में हैं।

अतः गांधीजी की बात सही है कि विश्व शांति के लिए पवित्रता का प्रयोग करना होगा, मानव के भीतर नैतिकता अंकुरित करनी होगी। उन्हें सौम्य बनाना होगा। लोभ, मोह, क्रोध, बदले की भावना से मुक्त करना होगा। इसके लिए हम माता पिता को कदम बढ़ाना होगा। अपने बच्चों को नैतिक शिक्षा देनी होगी। दूसरों की भावनाओं, स्वाभिमान का सम्मान करना सिखाना होगा तभी हमारी नवपीढी सुरक्षित और शांति से रह पायेगी । धरा जो अकुला रही है पर्यावरण के प्रदूषित होने से स्वच्छ ताजी हवा में सांस ले पायेगी।

-इंदौर, मध्यप्रदेश

विश्व शांति की परिकल्पना

सरस्वती मल्लिक

अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस की परिकल्पना १९८१ में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा की गई थी। दो दशक बाद, २००१ में, महासभा ने सर्वसम्मति से इस दिवस को अहिंसा और युद्ध विराम की अवधि के रूप में नामित करने के लिए मतदान किया। शांति का तात्पर्य है समता,समानता बंधुत्व और भाईचारा तथा सम्मान के साथ जीना और जीने देना। यह बात परिवार, समाज, देश दुनिया सब पर समान रूप से लागू होती है।

इसके लिए जरूरी है कि प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे के प्रति सौहार्द की भावना रखे तथा शांति को कायम रखने के लिए चिंतन करे।

संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना और भारत

संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना में भारत सबसे बड़ा योगदान कर्ता है १९५० के दशक में संयुक्त राष्ट्र संघ के अस्तित्व में आने के समय से ही भारत संयुक्त राष्ट्र संघ के शांति स्थापना मिशनों में सबसे अधिक सैनिकों का योगदान करने वाला देश रहा है।

१९४८ से आज तक, दुनिया भर में स्थापित ७१ संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों में से ४९ में २५३००० से अधिक भारतीयों ने सेवा की है । भारत ने ८२ देशों के लगभग ८०० शांति स्थापना अधिकारियों को प्रशिक्षित भी किया है।

विश्व शांति के लिए प्रयास-

विश्व शान्ति कैसे प्राप्त की जा सकती है? इसके लिए कई सिद्धान्तों का प्रस्ताव किया गया है। उदाहरण स्वरूप विश्व शांति के लिए यह अनिवार्य है कि संसाधनों को लेकर संघर्ष नहीं हो। तेल एक ऐसा ही संसाधन है और तेल की आपूर्ति को लेकर संघर्ष जाना पहचाना है। इसलिए, पुनः प्रयोज्य ईंधन स्त्रोत का उपयोग करने वाली प्रौद्योगिकी विकसित करना विश्व शांति हासिल करने का एक तरीका हो सकता है।

संयुक्त राष्ट्र को मजबूत बनाया जाए-

संयुक्त राष्ट्र को मजबूत करते हुए उसके निष्पक्ष फैसलों को मानना होगा। सभी देशों को विकास के पथ पर आगे बढने के समान अवसरों का निर्माण करना और उन्हें बढ़ावा देना होगा। सभी की मूलभूत आवश्यकताएं पूरी होनी चाहिए।

सभी देशों को एक-दूसरे के अस्तित्व, स्वाभिमान, अखंडता और प्रभुसत्ता का सम्मान करना होगा। एक-दूसरे के आंतरिक विषयों में हस्तक्षेप नहीं करने के साथ समानता और परस्पर लाभ की नीति का पालन करना होगा।

नैतिक शिक्षा से शांति

विश्व शांति के लिए सभी देशों को नैतिक शिक्षा, नैतिक प्राकृतिक कृषि की ओर बढना होगा। बढ़ते अपराध और लगातार टूटते हुए परिवार को कम करने के लिए परिवार और विद्यालय में नैतिक शिक्षा को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। विश्व में शांति तब होगी, जब शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी और पैसा कमाना नहीं होगा बल्कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व निर्माण और सहअस्तित्व की भावना का विकास होगा।

अहिंसा तथा हस्तक्षेप की नीति का अनुसरण

विश्व शांति की स्थापना के लिए भारत का मूलमंत्र रहा है- अहिंसा परमो धर्मः। अहिंसा धर्म अपनाने के साथ-साथ अहस्तक्षेप की नीति का भी अनुसरण करना होगा।

हिंसा से हिंसा बढ़ती है, 'घृणा' ही घृणा को जन्म देती है और प्रेम से प्रेम की अभिवृद्धि होती है। अतः यह निश्चित है कि बिना प्रेम और अहिंसा के विश्व में शान्ति स्थापित नहीं हो सकती। शान्ति के अभाव में मानव जाति का विकास सम्भव नहीं।

यदि सभी सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक आचरण अपनाएं तो बहुत से विवादों का समाधान हो सकता है। बौद्ध धर्म, जैन धर्म या हिंदू धर्म सभी में अहिंसा अस्तेय, अपरिग्रह को स्थान दिया गया है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी इन्हीं मूल्यों पर जोर देते थे।

-मधुबनी, बिहार

विश्व शांति

शशिप्रभा शाक्य

विश्व शांति अमूल्य धरोहर,
विश्व के कोने-कोने में ।
इसको सुरक्षित रखने में हम,
जुट जाएँ एक होने में।।

भाईचारा रहे परस्पर,
आपस में कोई द्वेष न हो ।
सबको शांति से जीना है,
इसमें कोई मतभेद न हो ।।

अपने देश की प्रगति में कभी,
कोई बाधा मंजूर नहीं ।
अपने स्तर पर सब सुख पाएँ,
वह दिन अब तो दूर नहीं।।

हमें सदा आगे बढ़ना है,
यह तो उन्नति का सूचक है ।
पर मर्यादा बनी रहे यह,
देश की संस्कृति का मूलक है ।।

सभी देश मिलकर यह सोचें,
विश्व शांति यह बनी रहे।
हर देश की धरती पर,
उनकी संतानें सुखी रहें ।।

हर देश के हर वासी को,
शिक्षित होना जरूरी है।
विश्व शांति के मूल्य को समझें,
यह तो बहुत जरूरी है ।।

शिक्षा का परचम जब फहरे,
सब देशों का मान बढ़े।
निज संस्कृति और मर्यादा का,
यह विस्तृत वितान बढ़े।।

-भोपाल

विश्व शांति के लिए चहुंमुखी प्रयास

रति चौबे

मनुष्यों व देशों के बीच शांति तथा सद्भावना लाना ही विश्व शांति का अर्थ है, पर फिर भी आज बाजारीकरण के इस युग में मन की धरा बजंर हो गई,बीजों में दीमक लग गई शांति के अकुंर कैसे फूटे वे प्रश्न चिन्ह बनकर खड़े हैं..?

विश्व शांति दिवस प्रत्येक वर्ष 21 सितंबर को मनाया जाता है। यह दिन विश्व में शांति और सौहार्द को बढ़ावा देने के लिए मनाया जाता है। इस दिन को मनाने का उद्देश्य विश्व में शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देना है। पर क्या हम पूर्णरूपेण सफल हो रहे हैं? ख्वाहिशे हर देश व व्यक्तियों की इतनी बढ़ी कि शांति का महत्व वे भूल गये या कि सभी मतलबी हो गये हैं।

शांति हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है। यह हमें आनंद, सुख और समृद्धि प्रदान करती है। शांति के बिना, हमारा जीवन अशांत और दुखी हो जाता है। शांति हमें अपने परिवार, समाज और देश में सुरक्षित और सुखी जीवन जीने का अवसर प्रदान करती है। १९८१ में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा शांति दिवस की स्थापना की गई थी जिसका मूल उदेश्य ही शांति के लिये भरपूर प्रयास करना था, और किये भी ...।

विश्व शांति दिवस ही नहीं हमें हर अवसर पर, शांति के लिए प्रयास करने चाहिए। हमें अपने दैनिक जीवन में शांति को बढ़ावा देने के लिए काम करना चाहिए। हमें अपने परिवार, समाज और देश में शांति को बढ़ावा देने के लिए काम करना चाहिए। हमें अपने विचारों और कार्यों में शांति और सौहार्द को बढ़ावा देना चाहिए। शांति पुरूष लालबहादुर शास्त्री को हम कैसे भूल सकते हैं जिन्होंने अपना सारा जीवन ही शांति स्थापित करने में लगा दिया था । उनका नाम कभी धूमिल ना होगा।

संपूर्ण विश्व में शांति स्थापित हो इस हेतु हमें शांति के लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित करने वाले उदाहरणों को देखना चाहिए। हमें महात्मा गांधी, मार्टिन लूथर किंग जूनियर और नेल्सन मंडेला जैसे महान नेताओं के जीवन और कार्यों को देखना चाहिए। इन नेताओं ने शांति और सौहार्द के लिए अपना जीवन समर्पित किया था।

महात्मा गांधी ने अहिंसा और सत्याग्रह के माध्यम से भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी। उन्होंने शांति और सौहार्द के माध्यम से विश्व को एक नई दिशा दिखाई। मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने अमेरिका में नागरिक अधिकार आंदोलन का नेतृत्व किया। उन्होंने शांति और सौहार्द के माध्यम से अमेरिका में नागरिक अधिकारों की लड़ाई लड़ी।

नेल्सन मंडेला ने दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के खिलाफ लड़ाई लड़ी। उन्होंने शांति और सौहार्द के माध्यम से दक्षिण अफ्रीका में लोकतंत्र की स्थापना की थी। विश्व शांति के लिए प्रयास करने के लिए हमें सभी नागरिकों को प्रेरित करना चाहिए। हमें अपने दैनिक जीवन में शांति को बढ़ावा देने के लिए काम करना चाहिए। यही नहीं हमें अपने परिवार, समाज और देश में शांति को बढ़ावा देने की दिशा में भी उद्यत होना चाहिए। हमें अपने विचारों और कार्यों में शांति और सौहार्द को बढ़ावा देना चाहिए।

अशांति के दौर में शांति का मार्ग प्रशस्त करती मेरी कुछ काव्य पक्तियां प्रस्तुत हैं...

कब रूकेगी यह अशांति
की उमढ़ती धूल?
कब बंद होगा ये शोर-शराबा
कब बंद होगे ये कत्ले आम, /
कब प्रवाहित होगी प्रेम -गंगा/
कब शांतिपुष्प देश में महकेगे/
देख उमढ़ते अशांति के बादल/
मन धबराता,तन थरथराता है/
ह्दय धड़कता,धड़कने दोगली/
नेह- वीणा के तार सब टूट.है/
आओ हम सब मिल-
शांति ध्वजा लहराये-
जात-पात दंगे- फसाद
को दफनायें/
पूरे विश्व में प्रेमबीज रोपित करे/
अपनत्व की ललक जगावे/
प्रेम भावना जन में जगावे/
सर्वत्र विश्व शांति की
लौ प्रज्जवलित करें।

-नागपुर

जे.के.स्टील फर्नीचर
भोपाल
जीवन मारण
स्वत्वाधिकारी संपर्क-9826422823

१. पेट्रोल पंप के सामने, चूना भट्टी, कोलार मुख्य मार्ग, २. सर्वधर्म कॉलोनी सी सेक्टर पुल समीप कोलार मुख्य मार्ग, ३. बरखेड़ी कलां मुख्य मार्ग, भोपाल

मासिक 'निर्दलीय' की विषय-सारणी

निर्दलीय प्रकाशन समूह की गतिविधियो से आप भलीभांति परिचित हों। आपका प्रोत्साहन हमें बल और ऊर्जा प्रदान करता है।

विगत दो दशकों से नियमित प्रकाशित निर्दलीय प्रकाशन की बहुरंगी अंतर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका 'निर्दलीय' प्रति माह विशेषांक के रूप मे प्रकाशित हो रही है। नई दिल्ली स्थित सलाहकार श्री सुरेश खांडवेकर एवं श्रीमती कविता मल्होत्रा और संरक्षक सेठ रामनिवास गुप्ता एवं श्री रमेश सिंह राघव के सहयोग से मासिक पत्रिका की साज-साज्जा और सामग्री में निरंतर उत्कृष्टता एवं विकास परिलक्षित है। इस तारतम्य में आगामी वर्ष २०२५-२६ के लिए संपादकीय मंडल ने बारह विषयों का चयन किया है । आप सभी से प्रार्थना है कि आप इन विषयों पर अपने आलेख, खट्टे मीठे अनुभव, काव्य, कथा- कहानी,कविता, प्रहसन,संस्मरण अदि मासिक पत्रिका में प्रकाशनार्थ भेज सकते हैं। आपसे निवेदन है निम्नलिखित विषयों पर प्रकाशित होने जा रहे निर्दलीय मासिक पत्रिका के विशेषांकों के लिए विषयांतर्गत सामग्री अवश्य भेजें। माहवार विषय इस प्रकार है--

फरवरी - सर्वधर्म समभाव, मार्च- वासंती उल्लास, अप्रैल - फुर्सत, मई -सैर सपाटा, जून-मुखर अभिव्यक्ति, जुलाई- निर्दलीय के अंतरराष्ट्रीय वार्षिक सम्मान समारोह पर केंद्रित, अगस्त - स्वाधीनता और लोकतंत्र, सितंबर - भाषाई सौहार्द, अक्टूबर - शाश्वत प्रेम, नवंबर- शिक्षा, भाषा और साहित्य तथा दिसंबर - पर्यावरण एवं जलवायु संरक्षण, जनवरी- विश्व शांति ।

माह फरवरी २०२५ में प्रकाशित होने जा रहे विशेषांक (सर्वधर्म समभाव) हेतु रचनाएं/आलेख २६ जनवरी २०२५ तक व्हाट्स ऐप/मेल पर मिल जाना चाहिए।

* कैलाश आदमी, संस्थापक संपादक 9424443401/मेल nirdaliyadaily @gmail.com

॥ नमो बुद्धाय ॥
भारतीय बौद्ध महासभा, उज्जैन (म.प्र.)
(The Buddhist Society of India)
Society Registration No. 3227/55, Public Trust No. F-982 (Mumbai)
(संस्थापक अध्यक्ष : बोधिसत्व डॉ. बाबा साहेब आम्बेडकर)
"महाकारुणिक"
तथागत भगवान गौतमबुद्ध
कानीपुरा वैश्य टेकरी
विश्व शांति महास्तूप महोत्सव
दिनांक 2 फरवरी 2025, रविवार ❋ समय : प्रातः 10 बजे से...
स्थान : बौद्ध महास्तूप (वैश्य टेकरी), कानीपुरा, तराना रोड़, उज्जैन (म.प्र.)
पंचशील ध्वजारोहण एवं वंदना - पूज्य भंते शाक्यपुत्र सागर थेरो एवं भंते धम्मबोधी जी द्वारा
मुख्य अतिथि
मा. किरण जी रिजिजु
केबिनेट मंत्री, भारत सरकार
मा. डॉ. मोहन जी यादव
मुख्यमंत्री, म.प्र. शासन
मा. चन्द्र बौधी जी पाटील
राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय बौद्ध महासभा
विशिष्ट अतिथि
मा. श्री अनिल जी फिरोजिया
सांसद, उज्जैन-आलोट संसदीय क्षेत्र
मा. श्री सतीश जी मालवीय
विधायक, विधानसभा क्षेत्र घट्टिया
मा. श्री अनिल जी जैन
विधायक, विधानसभा क्षेत्र उज्जैन-उत्तर
मा. श्री महेश जी परमार
विधायक, विधानसभा क्षेत्र तराना
मा. श्री मुकेश जी टटवाल
महापौर, उ.न.पा.नि. उज्जैन
मा. श्रीमती कलावती यादव
सभापति, उ.न.पा.नि. उज्जैन
विशेष अतिथि
धम्मरतन सोमकुंवरजी
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
भारतीय बौद्ध महासभा
मा. सी.एल. बौद्ध जी
प्रदेश अध्यक्ष, भारतीय बौद्ध महासभा
भोपाल (म.प्र.)
मा. चिन्तामण जी पगारे
प्रदेश सचिव, भारतीय बौद्ध महासभा
भोपाल (म.प्र.)
मा. पंकज कुमार उके
प्रदेश सचिव, भारतीय बौद्ध महासभा, इन्दौर
मा. श्री नारायण जी यादव
दादा दयालु, वरिष्ठ समाजसेवी
मा. ज्योति भेले
प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य
अध्यक्षता मा. आर.आर. जवादे, जिलाध्यक्ष - भारतीय बौद्ध महासभा
मंच संचालन - बौद्ध धर्मेन्द्र सोलंकी मिडिया प्रभारी
आयोजक - भारतीय बौद्ध महासभा, उज्जैन एवं प्रवुद्ध महिला संगठन, उज्जैन एवं समस्त आम्बेडकरवादी संगठन
7566666103, 8770629113, 8319035640, 9926629671, 9827660120, 9977484999, 9993436027
7415240550, 7470890944, 8989551300, 8962294334, 9179338516, 8959207518, 9179338516

RAM NIWAS & SONS
SRD STEELS (P) LTD.

SETH RAM NIWAS GUPTA
Chairman

SANJEEV GUPTA
Director

RAJEEV GUPTA
Director

DEEPAK GUPTA
Director

skgc

SHRI KRISHAN GRIT CO.
SKGC MINERALS LTD.

BRANCHES

Delhi • Mumbai • Bhopal • Bhilai • Ludhiana • Faridabad • Ahmedabad
Ghaziabad • Roorkee • Bangalore • Indore • Jaipur • Kanpur (U.P.)

Dr. Sanjeev Gupta (The Winner of)

- Global Business Icon Award - 2018
- Asia One-Global Indian of the Year 2018-19
- India's Greatest Brands 2018-19
- ARCH of Excellence Award
- Winner of National Award in 2021
- Meri Dilli Shresth Shree Sammaan - Nov. 2020
- ISI Mark from Bureau of Indian Standard - Dec. 2020
- Meri Dilli Shresth Shree Sammaan - Aug. 2022

Exhibit & Sell your books at

World Book Fair, New Delhi

1-9 Feb 2025

Bhartat Mandapam, New Delhi

- India's biggest book fair
- Reach millions of readers
- Book launches & Signing
- Plans @ Rs 3500

BOOK NOW

Call Us
70143-16708
92163-44983

Exhibit & Sell at world book fair-2025 (New Delhi). Reach million of offline rea...

अभी बुक करें

स्वामी-मुद्रक-प्रकाशक-संपादक कैलाश श्रीवास्तव 'आदमी' द्वारा राघव भवन,गली क्र. 6/72 दयालपुर,दिल्ली 110090 से प्रकाशित,निर्दलीय प्रेस,भोपाल से मुद्रित।